महर्षि वेदव्यास जी द्वारा रचित * सचित्र संक्षिप्त हिंदी व अंग्रेजी में—रंग भरो

श्री कल्कि पुराणम्

(अब स्वप्नानुभव-संकल्प-उपचार-प्रार्थना सहित)

श्री महाविष्णु

64 कलाओं (शक्तियों) से परिपूर्ण

त्रेता में श्रीराम
12 कलाओं (शक्तियों) सहित

द्वापर में श्रीकृष्ण
16 कलाओं (शक्तियों) सहित
(श्रीमद्भागवत)*

रामावतार से त्रिकूट पर्वत पर
श्री कल्कि के लिए तप कर रहीं
माँ वैष्णो–पृ.17 श्राइन बोर्ड पब्लिकेशन

कल्कि वालों के गुरु
सिर्फ हनुमान जी**

64 कलाओं (शक्तियों) सहित महाविष्णु का अंतिम व प्रमुख दसवाँ अवतार

महामंत्र- जय कल्कि जय जगत्पते, पद्मापति जय रमापते

21 बार अपनी नियमित पूजा में गंगाजल की तरह मिलाने से परेशानियों से निकलने के रास्तों के साथ वैभवता (धन, संपदा, ज्ञान भक्ति, ऐश्वर्य) मिलती है।

मूल्य मात्र ₹50

फ्री मंदिर में देखने व पढ़ने के लिए। ऑफिस/घर ले जाने के लिए 10 रुपए मंदिर में रखी दान-पेटी में डाल दें।

श्री हनुमान जी

ठाकुर रामकृष्ण परमहंस

कल्कि वालों के गुरु हनुमान जी या ठाकुर रामकृष्ण परमहंस से रास्ते ही रास्ते

कांशी विश्वनाथ धाम, बैजनाथ धाम, गिरिराज जी, गीताश्रम (स्वर्गाश्रम), अग्रोहा धाम नैमिषारण्य तीर्थ (ललिता मंदिर) में कल्कि जी की मूर्ति के आगे लगी स्टील प्लेट पर खुदा संदेश

पुकारे नहीं सुन रहे गाय की तुम्हें आज गोपाल क्या हो गया
विदेशी हटे, दास उनके डटे, इसी को सभी मान बैठे स्वराज

—ठाकुर रामकृष्ण परमहंस कोलकाता*

900 वर्षों की मुगल (मुसलमान) शासकों की गुलामी के बाद अंग्रेजों ने महज 150 वर्षों की गुलामी में सोची-समझी साजिश के तहत अंग्रेजी (कांवेंट) शिक्षा के स्कूल स्थापित करके हमारी नई युवा पीढ़ी को इस तरह शिक्षित किया कि वह अपनी ही संस्कृति, धर्म, संस्कार एवं देवी-देवताओं को नीची दृष्टि से देखने लगे इससे सिर्फ उनका खून हिंदुस्तानी रहा बाकी सब विलायती हो गया।**

—इंग्लैंड की नीतियों के पालनकर्ता-लार्ड मैकाले हाई कोर्ट चीफ जस्टिस

18 वीं शताब्दी में अंग्रेजों ने हमारे व्यापार, दस्तकारियों, किसानों की सारी कमाई पर अधिकार (कब्जा) करके आधा किलो गेहूँ राशन में दे रहे थे। साथ ही नाप नाप कर जेलखाने के कैदियों की तरह कपड़ा देकर सारी कमाई इंग्लैंड भेजने की योजना बनाकर जैसे ही शुरू करने जा रहे थे, तभी हिंदू जाति और हिंदू धर्म के सर्वनाश की ऐसी भयानक योजना को देखकर- हिरण्यकश्यप को मारकर प्रहलाद को बचाने वाले महाविष्णु ने कल्कि का रूप धारण करने का ऐलान हनुमान जी के आवेशावतार गुरुवर बालमुकुंद जी से करवाया। उन्होंने श्री कल्कि नाम का पूजन, हवन, नाम जाप शुरू किया और साथियों से कराया। उन्हीं का अनुसरण करते हुए क्रांतिकारी रासबिहारी बोस के दाहिने हाथ के अवतार पंडित लक्ष्मीनारायण* (जो संस्कृत, हिंदी, उर्दू व बंग्ला के विद्वान थे) ने कार्य को आगे बढ़ाया।**

निष्कर्ष : अब आपको अपने परिवार, व्यापार के लिए अच्छा सोचना और बोलना है। मन मे हर समय जय श्री कल्कि का सुमिरन करते हुए उन्हीं कृष्ण रूप धारी को कल्कि रूप में प्रकट कराके सत्युग की स्थापना करानी है। इसी से भारत गौरवान्वित होकर पुनः बेहतरीन, शक्तिशाली, समृद्ध स्वरूप में उभरेगा।

** **अतिथि देवो भवः महंगा पड़ा-धर्म की आड़ में बहु पत्नी-तलाक से एक से अनेक हुए**

इन विदेशी मुगलों को अतिथि देवो भवः के संस्कार तले हिंदुओं ने जो सत्कार दिया तो- वापिस तो अपने देश क्या गए हिंदुओं पर ही अपनी गुलामी का शिकंजा कसते चले गए। इन विदेशी क्रूर, निर्दयी, दरिंदे, मक्कार, चालबाज, कुटिल, दोगले, धोखेबाज मुगलों ने हमारी ही माँ बहन बेटियों से अपने धर्म की वृद्धि की। मंदिरों की बुर्जियाँ तोड़कर उनकी मस्जिदें बनाईं। कुटिल कूटनीति से डरा-धमकाकर डरपोक हिंदुओं की चोटियाँ कटवाकर उन्हें मुसलमान बनाया। औरंगजेब तो तब तक भोजन नहीं करता था जब तक एक बोरी हिंदुओं की कटी हुई चोटियाँ उसके पास नहीं आ जाती थीं। अर्थात् प्रतिदिन इतने हिंदू परिवारों को जबरन मुसलमान बनाया जाता था।

हिंदुओं में शादियाँ दिन में होती थीं

पहले हिंदुओं में शादियाँ दिन में होती थीं। उसमें मुगलों के सैनिक हमारी बहू-बेटियों को उठा कर ले जाते थे। इसलिए शादियाँ भी रात के समय लुक-छिप कर होने लगीं। तब से ही भारत में रात की शादियाँ होने लगीं जो आज तक चल रही हैं। **शिवाजी सीरियल** में आप पाएंगे कि शिवाजी ने जिन हिंदू बहू-बेटियों को रास्ते से ही मुगल सैनिकों से छुड़ाकर उनको उनके घर भी भेजा तो कट्टरपंथी हिंदुओं ने उनके परिवार वालों द्वारा उन्हें स्वीकार नहीं करने दिया कि इन्हें मुसलमानों ने छू दिया है। ऐसे कट्टरपंथी हिंदुओं से मुगलों के हौसलें और बुलंद होते गए।

भारत में भी हिंदू नहीं बचता

सारे देश अंग्रेज और मुसलमान हैं। भारतवर्ष में भी यदि राजा रंजीत सिंह, महाराणा प्रताप और शिवाजी नहीं होते और लगभग 100 वर्ष पूर्व श्री हनुमान कल्कि नाम का ऐलान नहीं करते तो भारत में हिंदू नहीं होते। 1947 की आजादी के बाद धर्मनिरपेक्ष देश की आड़ में मुस्लिम देश बनाने की पुरजोर कोशिश ही क्या बिना ब्याज वाला इस्लामिक बैंक खोलने की फिराक में हैं ताकि ....

मानूँ मैं ना मानूँ

अनुभव पढ़ने से पहले.....ध्यान योग्य

1. ज्यादातर हिंदू जिन परिस्थिति विशेष के कारण सदियों से भावुक-शर्मीला-डरपोक रहा है, जैसा कि कुछ कल्कि भक्तों ने भगवान श्री कल्कि की अपने ऊपर कृपा बनाए रखने के लिए हमें अनुभव तो भेजे लेकिन अपना नाम व फोन नं. लिखने से मना कर दिया ऐसे में हमें जबरन वहाँ पर मामाजी, मेघना गोयल और इंदू बंसल का नाम देना पड़ा है ताकि जिज्ञासु अपनी समस्याओं का निवारण कर सकें।

2. स्वप्नानुभव दृष्टा पर पहले जाता है क्योंकि भगवान किसी न किसी रूप में आकर आपको निर्देश देते हैं। अनुभव आने पर सबसे पहले अपने आस पास की परिस्थितियों का निरीक्षण स्वयं करके जो अनुभव में दिखा है उसके अनुसार दिखने वाले को उपचार प्रार्थना बता सकते हैं। यदि आप उनको बताने की स्थिति में नहीं है तो एक दीपक जलाकर भगवान से प्रार्थना कर दें कि हे प्रभु! जिसका अनुभव है यह उन्हें ही दिखाएं मैं अभी बताने की स्थिति में नहीं हूँ। मेरे को इसके पाप से बचाएं।

3. स्वप्नानुभव में पुरूष जो आपके लिए अच्छा है तो श्री कल्कि समझें और यदि स्त्री आपके लिए सकरात्मक हैं तो उसे माँ दुर्गा समझें। इससे आपको अर्थ निकालने में सुविधा होगी।

4. इन स्वप्नानुभवों के अर्थ, उपचार, प्रार्थना से सिर्फ कल्कि वाले अपना अथवा अपने परिवार समाज का अच्छा कर सकते हैं।

ध्यान रहे— उपचारों से कोई भी समाज जन किसी का बुरा करने का प्रयास करेगा तो स्वयं करने वाले को ही परेशानी उठानी होगी।

विषय-सूची

1. जगदगुरु शंकराचार्य का प्रशस्ति-पत्र..... 2-7
2. महाविष्णु के 24 अवतार 9
3. सूत जी कथा कहते हुए (सचित्र) 10-11
4. चतुर्भुज रूप में दर्शन देते हुए श्री कल्कि (सचित्र) 12-13
5. परशुराम के आश्रम में शिक्षा ग्रहण करते (सचित्र) 14-15
6. कल्कि जी को वरदान देते हुए शिव पार्वती (सचित्र) 16-17
7. सिंहल द्वीप (सचित्र) 18-19
8. पद्मा देवी स्वयंवर (सचित्र) 20-21
9. शिव और पार्वती की पूजा करती पदमा जी (सचित्र) 22-23
10. शुक और पदमा जी (सचित्र) 24-25
11. श्री कल्कि को निहारती पद्मा जी (सचित्र) 26-27
12. श्री कल्कि और पद्मा जी का विवाह (सचित्र) 28-29
13. अनंत मुनि को माया ने कैसे ठगा (सचित्र) 30-31
14. विश्वकर्मा द्वारा निर्मित संभल ग्राम (सचित्र) 32-33
15. रण-भूमि (सचित्र) 34-35
16. युद्ध के लिए तत्पर म्लेच्छ स्त्रियाँ और श्री कल्कि (सचित्र) 36-37
17. कुथोदरी राक्षसी का वध करते भगवान श्री कल्कि (सचित्र) 38-39
18. कलि और भगवान कल्कि के मध्य युद्ध (सचित्र) 40-41
19. रानी सुशांता विष्णु जी की पूजा करते हुए (सचित्र) 42-43
20. भगवान श्री कल्कि और विषकन्या (सचित्र) 44-45
21. भगवान कल्कि, पद्मा जी रमा जी (सचित्र) 46-47
22. क्रोधित देवयानी (सचित्र) 48-49
23. भगवान श्री कल्कि का दरबार (सचित्र) 50-51
24. शंकराचार्य का आवाहन कल्कि जी के मंदिरों से ही सत्युग.....52
25. सिद्वपीठों, ज्योतिलिंगो, शक्तिपीठों , धामों में कल्कि जी की मूतियां 53-54
26. कल्कि जी का अनुभवगम्य भव्य मंदिर.....55
27. गूगल के नक्शे पर कल्कि जी के मंदिर 56
28. गोरखपुर में सांसद योगी आदित्य नाथ द्वारा कल्कि जी की स्थापना आरती के बाद 49 दिनों में ही मुख्यमंत्री बने.....55
29. वाराणसी में इधर-उधर बेकार घूमते बच्चे बाल वाटिका द्वारा संस्कार लेने पर नगर पालिका द्वारा पुरस्कृत 58
30. जगह-जगह चलती बाल वाटिकाओं के अलग-अलग संस्कार रोपण कार्यक्रमों की झलकियाँ.....59-65
31. जगह जगह विभिन्न कल्कि मंदिरों में चलती कुछ बाल वाटिकाओं की सूची.....66-73
32. कल्कि जी की मुक्तिदायनी आरती.....74
33. कल्कि जी मेरे दोस्त जय श्री कल्कि का 4 चैनलों पर प्रसारण.....75
34 कुछ स्वप्न-जागृत-वाणी-मानसिक अनुभवों के संकल्प उपचार प्रार्थना लिखित पैन ड्राइव में .....76~84
35. पहले लो फिर दो धनवान बनने व बने रहने की प्राचीन व सरल नियमावली.....85
36. कल्कि जी की कैबिनेट जो देती है उसमें से जरा सा शेयर योगी-योगिनियाँ लेती हैं (कार्टून).....बैक कवर के पीछे
37. कल्कि जी के प्रचार कार्यों में विभिन्न सहयोगी संस्थाएं .....बैक कवर

महर्षि वेदव्यास जी

श्रीमद् भागवत का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए सात दिनों में ही कल्कि पुराण की कथा/पाठ जरूरी क्यों ?

शुकदेव जी (वैशम्पायन, व्यास जी के पुत्र) पाण्डवों के एकमात्र वंशज अभिमन्यु पुत्र परिक्षित् (विष्णुरात) के जो उपदेश (कथा) सुना रहे थे वह अट्ठारह(18) हजार श्लोकों का समावेश था। महाराज परिक्षित् का सात-दिन में निधन हो जाने से उन सबका उपदेश न हो पाया था। अतः बाद में मार्कण्डेय ऋषियों के आग्रह पर शुकदेव जी ने पुण्याश्रम में उसे पुरा किया था। सूत जी (व्यास जी के शिष्य लोम हर्षण सूत के नाम से प्रसिद्ध हुए जिनकी धारणा शक्ति से प्रसन्न होकर महर्षि व्यास ने उन्हें पुराणें की संहितायें दे दी) का कहना है कि वे भी वहाँ उपस्थित थे और पुण्यप्रद कथाओं को सुना था। उन्हें ही आप लोगों को सुनाता हूँ। सूत जी ने उन ऋषियों को जो कथा सुनाई वही कल्कि पुराण के नाम से प्रसिद्ध है।

अतः पूर्ण फल प्राप्ति के लिए विद्वान वाचक व ज्ञानी वक्ता बन पढ़े तो कल्कि पुराण को इन्ही सात दिनों में अवश्य सुने अथवा पाठ कराये।

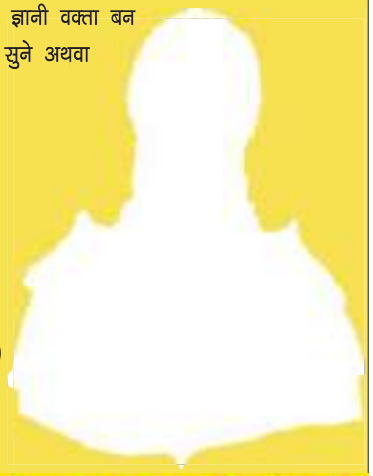

भीष्म पितामह

भीष्म जी महाभारत में कह गये हैं-

हनिष्यति कलौ प्राप्ते म्लेच्छां स्तुरग वाहनः
धर्म संस्थापकों यस्तु तस्मै कल्क्यात्मने नमः

जो कलि काल के घोड़े पर सवार होकर संस्थापन के लिए म्लेच्छों का वध (हनन) करेगें, उन कल्कि रूप परमात्मा को मेरा नमस्कार है।

माँ वैष्णवी एवं भगवान श्री कल्कि का रहस्यमय संबंध

भगवान श्री कल्कि

रामावतार से वैष्णो घाटी की गुफायें तप कर रही माँ वैष्णो को भगवान श्री कल्कि अपनी संहारिणी शक्ति के रूप में धारण कर गऊ, विप्र, धर्म की रक्षा करके पृथ्वी पर से कलियुगी शक्तियों का समूल नाश करके सत्युग की स्थापना करेंगे।
पूर्ण विवरण के लिए देखें माता वैष्णो देवी श्राइन बोर्ड व विस्तेतार पृष्ठ-17

माँ वैष्णो

भगवान श्री कल्कि की मुक्तिदायिनी आरती

ॐ जय जय सुर रक्षक, असुर विनाशक, पद्मावत् के प्यारे।
जय जय श्री कल्कि भक्त हितकारी, दुष्टन मारे हारे॥
जय जय खड्गधारी, जय असुरारी, गौ विप्रन के रखवारे।
क्षीर सागर वासी, जय अविनाशी, भूमि भार उतारन हारे॥
अलख निरंजन भव भय भंजन, जय संभल सरकारे।
भक्तजनों के पालनकर्ता, जय गऊन रखवारे॥
जय जयकार, करत सब भक्तजन, सुनिए प्राण प्यारे।
वेगहि सुधि लेना मेरे स्वामी, "हम सब दास" पुकारें॥
!! जय कल्कि भगवान !!
चार बरोबर बाढ़ है तापर चलता ब्यार
श्री कल्कि पार उतारिए अपनी ओर निहार

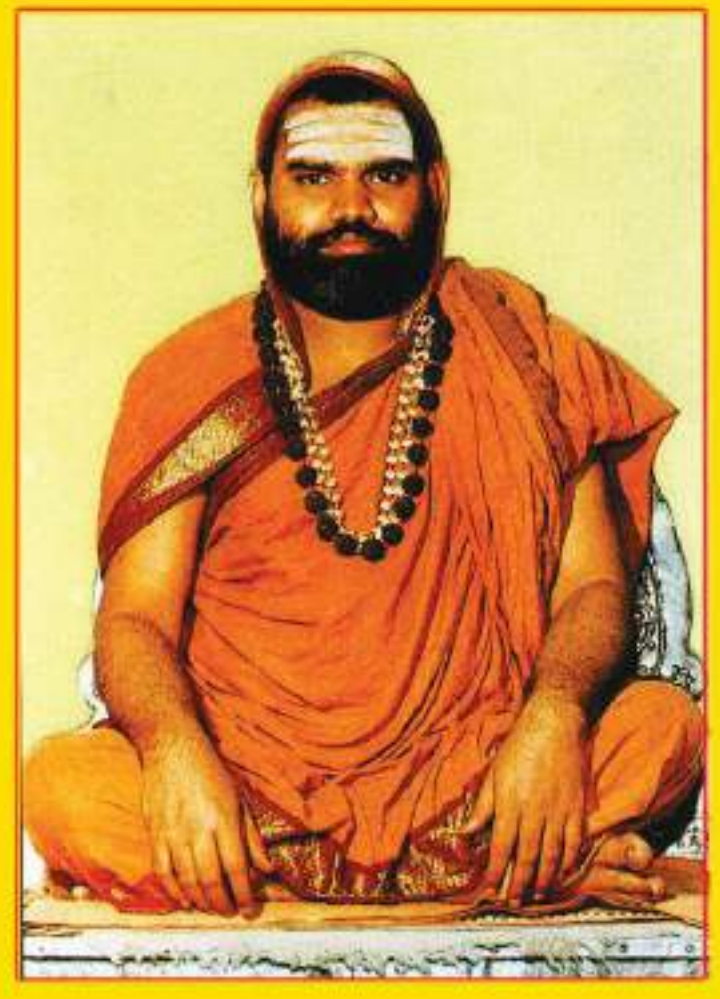

जगद्गुरु श्रंगेरी श्रीमद्भारतीतीर्थस्वामिभिः द्वारा
श्री कल्कि पुराण के लिए दिया गया
प्रशस्ति पत्र

॥श्री शृङ्गेरी श्रीजगद्गुरुमहासंस्थानम् ॥

[illegible]

॥श्री जगद्गुरु शृङ्गेरी श्रीमद्भारतीतीर्थस्वामिभिः ॥

[illegible]

संसार में रहने वाले सभी लोग हमेशा सुख ही चाहते हैं। इसका एकमात्र साधन धर्म ही है। अतः सभी लोगों को धर्माचरण बहुत आवश्यक है। जब इस धर्म की ग्लानि होती है तब परमात्मा इस भूमि पर अवतरित होकर धर्म की रक्षा करते हैं। भगवान् के मत्स्य कूर्मादि दस अवतार माने जाते हैं। और श्रीमद्भागवत में कहे गये हैं। इनमें अन्तिम कल्कि अवतार है जो कलियुग के अन्त में आने वाला है। उस अवतार के बारे में कल्कि पुराण में विस्तृत वर्णन उपलब्ध है। भगवान् वेदव्यास जी त्रिकालज्ञानी होने के कारण भावी कल्कि अवतार के बारे में भी कल्कि पुराण में वर्णन कर चुके हैं।

अब आप हिन्दी और अंग्रेजी अनुवाद सहित कल्कि पुराण का प्रकाशन कर रहे हैं। यह बहुत प्रशंसनीय है। इसे देखकर हम बहुत प्रसन्न हैं। सरल सुन्दर इस अनुवाद से सभी लोग कल्कि पुराण आसानी से समझ सकते हैं।

हम आप लोगों को आशीर्वाद दे रहे हैं कि आप ऐसे और उत्तम प्रकाशन करते रहें और भगवान् की असीम कृपा आप पर हमेशा रहे।

नयी दिल्ली
श्रावण शुक्ल प्रथमा संवत् 2050
8 अगस्त 1994

इति नारायणस्मरणम्

जगद्गुरु शंकराचार्य ज्योतिष्पीठाधीश्वर
श्री स्वामी स्वरूपानंद सरस्वती जी महाराज के द्वारा
श्री कल्कि पुराण के लिए दिया गया
प्रशस्ति पत्र

॥ श्री हरिः ॥

अनन्त श्री विभूषित श्री जगद्गुरु शंकराचार्य ज्योतिष्पीठाधीश्वर

श्री स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वतीजी महाराज

ज्योतिर्मठ (बदरिकाश्रम) हिमालय

अनन्त श्री विभूषित ज्योतिष्पीठाधीश्वर एवम् द्वारकाशारदापीठाधीश्वर

जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी श्री स्वरूपानन्द सरस्वतीजी महाराज का पावन संदेश

श्री कल्कि बाल वाटिका वर्तमान अराजकतावादी वातावरण में आदर्शवादी सभ्यता के निर्माण के लिये कृतसंकल्प है आधुनिक जीवन मूल्यों के साथ आध्यात्मिक धर्मोन्मुखता के सहचर्य से ही मनुष्य चारों पुरुषार्थों की प्राप्ति कर सकता है। आज देश में हमारी प्राचीन मान्यतायें एवम् हमारे संस्कार अपना महत्व खोते जा रहे हैं, क्योंकि उनके संरक्षण एवम् प्रवर्तन की कोई समुचित योजना नहीं बन पा रही है यदि हमें अपने देश को पुनः जगद्गुरु के पद प्रतिस्थापित करना है तो संस्कारों के निर्माण के लिये अथक प्रयास करना होगा।

यह प्रसन्नता की बात है कि छोटे-छोटे बच्चों में संस्कारों के निर्माण की प्रक्रिया में श्री कल्कि बाल वाटिका महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है आधुनिक वातावरण से ओतप्रोत विद्यालयों में शिक्षा ग्रहण करने वाले सुकुमार बच्चों के मस्तिष्क में यदि अच्छे संस्कारों के महत्व को प्रत्यारोपित किया जायेगा तो आजीवन वे सुसंस्कृत पथ पर चलेंगे। क्योंकि हमारे शास्त्रों में कहा गया है कि "संस्कारो सम्यक्या भवेत"।

इसी संस्था के द्वारा श्री कल्कि पुराण का हिन्दी एवम् अंग्रेजी अनुवाद ऐसे ही सुकुमार बच्चों द्वारा करवाया गया। इससे शास्त्रों के प्रति उनकी श्रद्धा एवम् अभिरुचि में वृद्धि होगी तथा वह ऐसे ही संस्कारवान कार्यों में रत रहने के लिये उत्साहित बने रहेंगे इन बच्चों द्वारा किया गया अनुवाद कार्य अत्यंत प्रशंसनीय है, यह संस्था संस्कार निर्माण के पथ पर अनुदिन बढ़ती रहे तथा बच्चे सम्पूर्ण भारतीयता के वातावरण में अपने व्यक्तित्व का निर्माण कर राष्ट्र सेवा में सफल हो जाए। यही पूज्य श्री चरणों की मंगल कामना है।

पूज्य श्री चरणों की आज्ञा से।

ब्रह्मचारी सुबुद्धानन्द
निजी सचिव
श्री जगद्गुरु शंकराचार्य जी महाराज
ज्योतिष्पीठ-द्वारकाशारदापीठ

धर्म की जय हो। अधर्म का नाश हो। गौ हत्या बन्द हो।

॥ श्री हरि: ॥ हर हर महादेव!!।

प्राणियों में सद्भावना हो। विश्व का कल्याण हो। गौ माता की जय हो।

परम पूज्य अनन्त श्री विभूषित ज्योतिष्पीठाधीश्वर
जगद्गुरु शंकराचार्य
स्वामी श्री माधवाश्रम जी महाराज
([illegible])

[illegible]:
अखिल भारतवर्षीय धर्मसंघ
कार्यालय-7, शंकराचार्य मार्ग सिविल लाईन्स, दिल्ली-54

अध्यक्ष:
अखिल भारतीय रामराज्य परिषद

अध्यक्ष:
धर्मसंघ महाविद्यालय
[illegible], दिल्ली
फोन नं. 2524981

अध्यक्ष:
दंडी स्वामी धर्मसंघ महाविद्यालय
[illegible], लुधियाना (पंजाब)
फोन नं. 31105

अध्यक्ष:
धर्मसंघ महाविद्यालय
[illegible] (हि.प्र.)

धर्मसंघ महाविद्यालय
[illegible] आश्रम [illegible], हरिद्वार
फोन नं. 426652

क्रमांक दिनांक 21.8.1994

अनन्त श्री विभूषित जगद्गुरु ज्योतिष्पीठाधीश्वर शंकराचार्य श्री माधवाश्रम जी की शुभाशी:।

कल्कि भगवान द्वारा सनातन धर्म से अनुप्राणित भारतीय संस्कृति संस्कृत प्रचार हेतु संचालित कार्यक्रम बाल बालिकाओं को शारीरिक मानसिक तथा बौद्धिक विकास के लिये सहायक हो यह हमारी [illegible] से प्रार्थना है।

सर्वप्रथम अवतार के विषय में [illegible] का कथन है कि—

[illegible]
[illegible]
भगवान श्री हरि जगत्कल्याणार्थ युग युग में

अवतार ग्रहण करते हैं। श्री हरि की बाल लीलाएं जहाँ बाल बालिकाओं को आनन्द देने वाली हैं, वे वहीं प्रेरक भी हैं। भगवान् विद्याध्ययन के लिये गुरुकुल जाते हैं यह हम सभी बालकों के लिये आदर्श भी है। गुरु के [illegible] द्वारा शिक्षा दीक्षाप्राप्त कर भविष्य उज्ज्वल बना सकेंगे। श्री कल्कि भगवान के अवतार का प्रसङ्ग यद्यपि भावी है अर्थात् (होने वाला) है तथापि सर्वज्ञ त्रिकालदर्शी महर्षि वेदव्यास के लिये भूत भविष्यत वर्तमान घटनाएं करामलकवत् प्रत्यक्ष होने से उन्होंने जो भविष्यद् वृत्ति से कल्कि पुराण का प्रणयन लोक कल्याण के लिये किया वह [illegible] है। आप लोगों का [illegible] सफल हो यह हमारी मंगलकामना है।

श्री चरण की आज्ञा से —[illegible]

जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी श्री माधवाश्रम जी महाराज के द्वारा
श्री कल्कि पुराण के लिए दिया गया
प्रशस्ति पत्र

धर्म श्री किशोर एम. व्यास द्वारा
श्री कल्कि पुराण के लिए दिया गया
प्रशस्ति पत्र

॥ श्री हरिः ॥

किशोर म. व्यास
(0212) 362567

"धर्म श्री" मानसर अपार्टमेंट्स
सूर्यमुखी दत्तमन्दिर के समीप
पुणे विद्यापीठ मार्ग, पुणे (411016)

—अभिनन्दन—

भारतीय संस्कृति के श्रेष्ठ धरोहर पुराणग्रन्थों में, भगवान के भावी श्री कल्कि अवतार की कथा महर्षि वेदव्यास जी महाराज ने कही है। कलि: शयानो भवति

इस उपनिषद् वाक्यानुसार तमोगुणप्रधान पापाधिक्यसमन्वय ही कलि का लक्षण है। दुष्टों का निःपात तथा सज्जनों का संरक्षण करते हुए इस दूषित वातावरण का नाश करके श्री कल्कि भगवान् [illegible] सत्युग की मंगल प्रभात लाएंगे।

इस सांस्कृतिक सुप्रभात की यह अरुणोदय बेला आज अंधकारपूर्ण स्थिति में धार्मिक सज्जनों से सत्कर्मों की अपेक्षा रखती है।

कलि की दीर्घ वृद्धि के साथ-साथ लोगों में अब इन सत्कर्मों की भी लहरें दिखने लगी हैं। उसी के अन्तर्गत 'कल्कि बाल वाटिका' का संस्कार कार्य तथा 'कल्कि पुराण' जैसे दुर्लभ ग्रन्थ का प्रकाशन देख अतीव प्रसन्नता होती है।

मैं इस सत्कर्म का हृदय से स्वागत करता हूँ।
आशा है-धार्मिक जगत् इससे अवश्य लाभान्वित होगा।
इस शुभ कार्य के लिये हार्दिक शुभकामना तथा अभिनन्दन।

प्रति — शुभाकांक्षी

गोवत्सद्वादशी
दिनांक: 31.10.1994

महाविष्णु का चौबीसवाँ अंतिम एवं प्रमुख में दसवाँ अवतार भगवान श्री कल्कि

महाविष्णु के चौबीस अवतार

महाविष्णु के प्रमुख दस अवतार

1.वाराह

2.कच्छप

3.मत्स्य

4.कूर्म

5.नृसिंह

6.वामन

7.राम

8.कृष्ण

9.बुद्ध

10.कल्कि

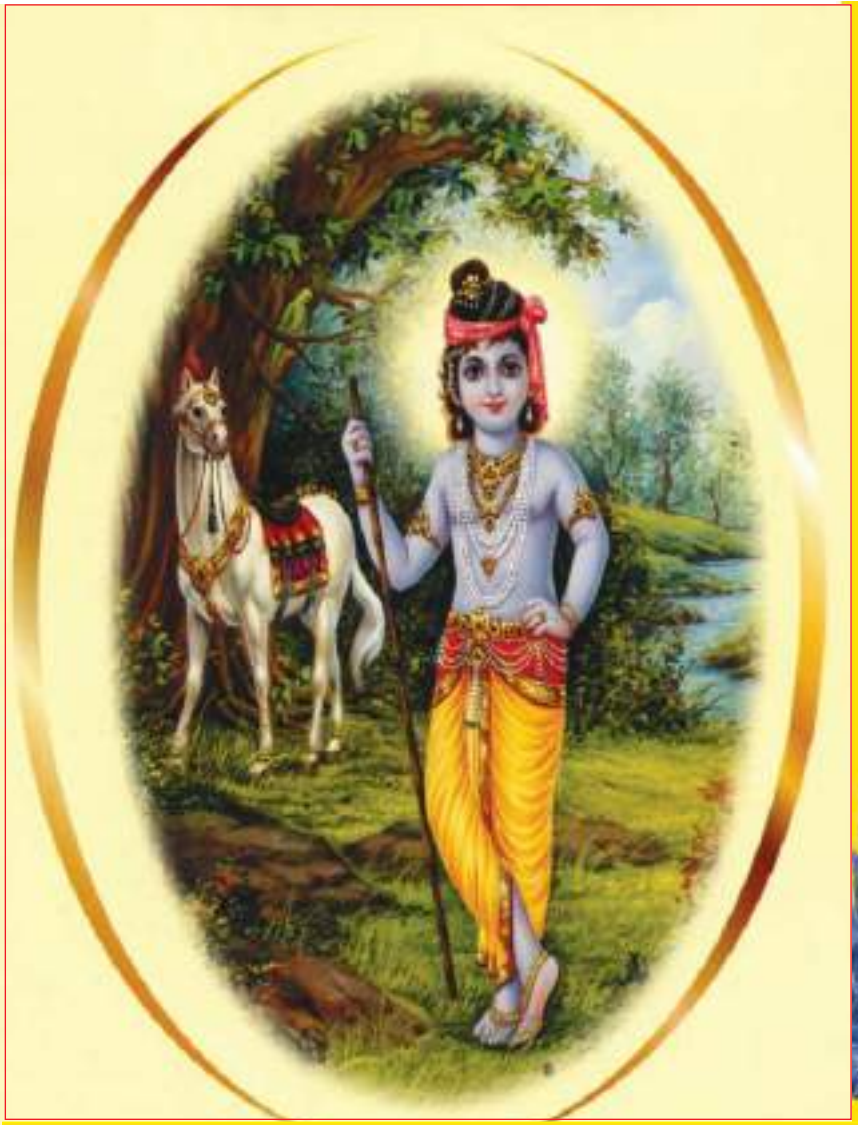

बाल श्री कल्कि

कलियुग में महाविष्णु (श्री कल्कि) महालक्ष्मी (पद्मा जी)

सूत जी बोले- ब्रह्माजी सभी देवताओं को लेकर भगवान विष्णु के पास गये और उन्हें कलि के दोष से धर्म की होने वाली हानि के बारे में विस्तार से बताया। देवताओं के दुख की कथा सुनकर श्री विष्णु ने कहा कि वे संभल ग्राम में विष्णुयश की पत्नी सुमति के गर्भ से जन्म लेंगे। लक्ष्मीजी सिंहल देश के राजा वृहद्रथ की पत्नी कौमुदी के गर्भ से जन्म लेंगी। आप सभी देवतागण भी हमारे बंधु-बांधवों के रूप में जन्म लेंगे। मरू और देवापि नामक दो राजाओं को मैं पृथ्वी पर स्थापित करूँगा, फिर मैं कलि रूपी सर्प का नाश कर धर्म और सतयुग की स्थापना कर बैकुण्ठ लोक में वापस लौट आऊंगा।

Sutji said - Brahmaji took all the devtas with him to Lord Vishnu and explained in detail about the mistakes done by Kali because of which Dharma is getting hampered. After listening to all the sorrows of the Devtas, Lord Vishnu consoled them by saying that he will take birth in the house of Vishnuyash and Sumati in village Sambhal. Goddess Laxmi will be born to King Brihadrath and wife Kamudi in Singhal. He also informed that all the devtas will also be born as their friends and family. Lord Kalki said he will establish Maru and Devapi on Earth, will kill kali and establish Dharma and Satyug and return to Baikuth Dham.

सूत जी शौनकादि ऋषियों को
कल्कि कथा सुनाते हुए

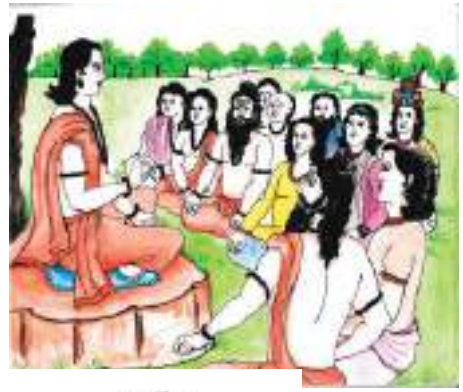

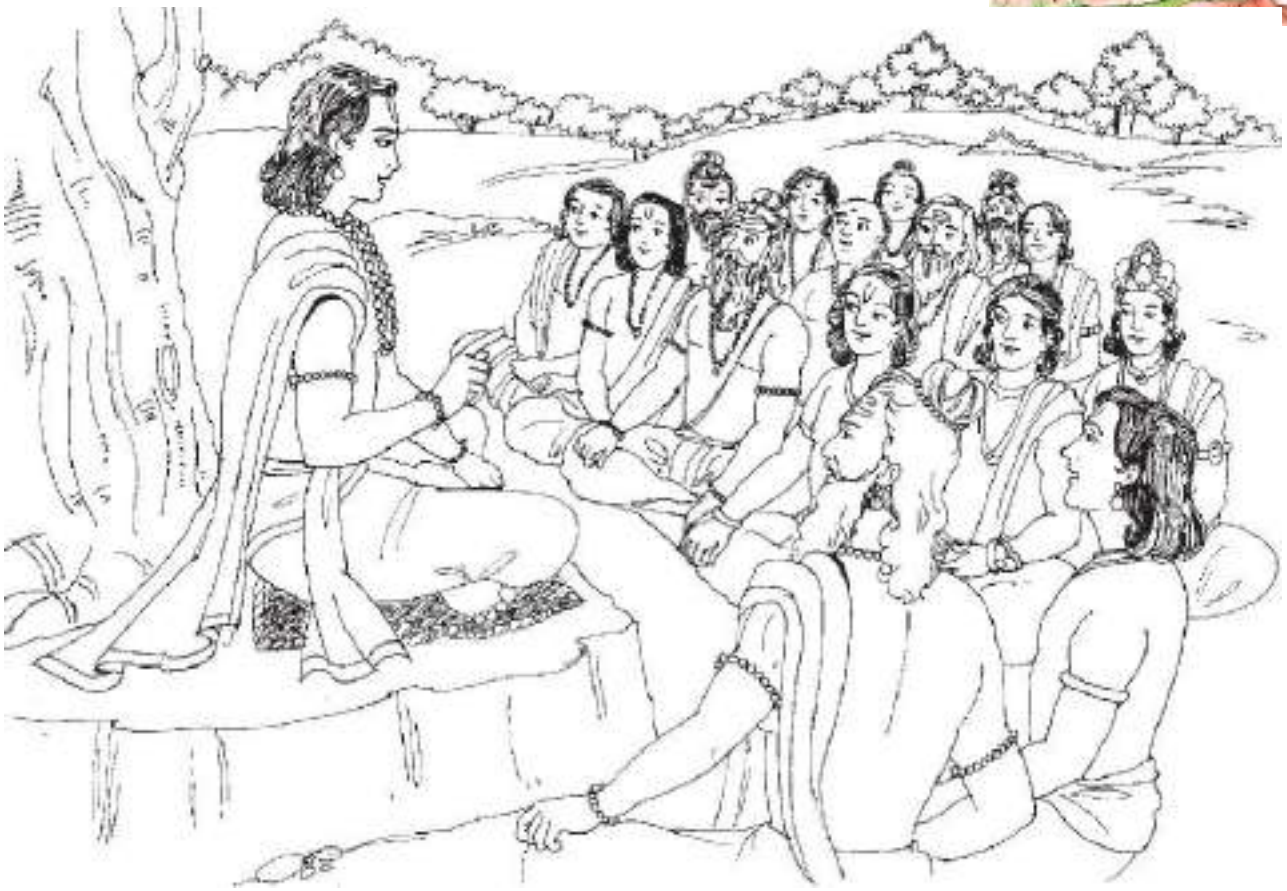

बैसाख मास की शुक्ल पक्ष की द्वादशी को भगवान विष्णु ने चतुर्भुज रूप में पृथ्वी पर अवतार लिया। माता-पिता बहुत प्रसन्न हुए। पवन देव ने भगवान विष्णु को ब्रह्माजी का संदेश दिया कि इस दुर्लभ चार भुजाओं वाले रूप को त्याग कर साधारण मनुष्य का रूप धारण करे। भगवान विष्णु ने तुरंत वैसा ही किया। यह देखकर उनके माता-पिता आश्चर्यचकित हो गए पर इसे उन्होंने अपना भ्रम माना। इसके बाद संभल ग्राम के सभी निवासी अनेक प्रकार के मंगलाचार करने लगे।

Kalkiji was born in the month of Baishak shukla paksh's dwadashi with 4 arms on the earth. Both parents were very happy . Lord Pawan(Air) gave the message of Lord Brahma to Lord Kalkiji to be born in human form and leave his godly appearance. Hearing this, Lord Vishnu instantly did as was asked by Lord Brahma. Seeing the change, Lord Kalki's parent's were surprised but they thought it might be their illusion. After this the people of Sambhal gram did lots of pious rituals.

माता सुमति पिता विष्णुयश को
चतुर्भुज रूप का दर्शन देते हुए

महेन्द्र पर्वत पर रहने वाले भगवान परशुराम कल्कि जी को जनेऊ (उपनयन) संस्कार के बाद अपने आश्रम में ले आए। समस्त वेदों को जानने वाले और धनुर्विद्या में पारंगत भगवान परशुराम ने गुरू रूप में कल्कि जी को शिक्षा देनी प्रारंभ की। शीघ्र ही कल्कि जी ने चौंसठ शक्ति (कलाओं) और वेदों को उनके अंगो सहित तथा धनुर्विद्या का पूर्ण ज्ञान प्राप्त किया। कल्कि जी के द्वारा दक्षिणा के बारे में पूछने पर भगवान परशुराम ने कहा कि शिव जी को प्रसन्न कर उनसे अस्त्र और वेदज्ञ शुक को पाकर जब आप (कल्कि जी) पृथ्वी पर धर्म की स्थापना कर देंगे, मुझे मेरी गुरू दक्षिणा मिल जाएगी।

Lord Parshuram who resided on Mahendra mountain, after the janeu (upanayan) ceremony of Lord kalkiji took him to his ashram. Lord Parshuram who was well versed in Vedas and master of archery started teaching Lord Kalki as his disciple. Very soon Lord Kalki learned all the 64 kalas (power) and Vedas along with archery. After learning when Lord Kalki ji asked about guru-dakshina to lord Parshuram ,he said,"When you will get the weapons and knowledgeable Shuk(parrot) from Lord Shiva,with his blessings, and establish Dharma on earth, I will get my guru-dakshina.

महेन्द्र पर्वत पर परशुराम जी के आश्रम में शिक्षा ग्रहण करते हुए

गुरू परशुराम जी की आज्ञानुसार कल्कि जी ने महादेव की विधिवत पूजा करके स्तुति की जिससे प्रसन्न होकर महादेव पार्वती जी के साथ प्रगट हुए और मुस्काते हुए कल्कि जी से कहा कि आपके द्वारा रचित इस स्तोत्र को संसार में जो भी पढ़ेगा इस लोक और परलोक में उसके सभी मनोरथ सफल होंगे। विद्यार्थी को विद्या प्राप्त होगी। इसके बाद उन्होंने कल्कि जी को शीघ्र गति वाला बहुरूपी गरूड़-अश्व, सब कुछ जानने वाला वेदज्ञ तोता और पृथ्वी का भार दूर करने में सहायक महाचमक वाली भयंकर रत्नसरू तलवार प्रदान की।

As directed by Lord Parshuram, Kalkiji performed the pujas judiously, for Lord Shiva because of which he along with Goddess Parvati blessed him. Lord Shiva told who ever will listen to your (kalkiji) verse,be it anywhere his/her all wishes will come true. All the students will receive knowledge. Then Lord Shiva gave Kalkiji speedy Garur-Horse, know it all parrot and very powerful shining sword Ratnasaru who will help in establishing Dharma on earth.

कल्कि जी को वरदान देते हुए
शंकर जी एवं पार्वती जी

एक दिन संध्या के समय शुक ने कल्कि जी को अति सुंदर, रत्नों और मणियों से सजे सिंहल द्वीप के बारे में बताया जिसके राजा वृहद्रथ अत्यंत बलवान और पराक्रमी हैं। लक्ष्मी जी ने उनकी पुत्री के रूप में जन्म लिया है इसलिए हर समय जप-तप में लीन रहने वाली पद्मावती को महादेव ने पार्वती जी के साथ प्रगट होकर वरदान दिया है कि नारायण के साथ ही उसका विवाह होगा। अन्य जो भी मनुष्य, देवता, राक्षस, नाग इत्यादि पत्नी रूप में उसकी कामना करेगा, वो उसी क्षण स्त्री बन जाएगा। यह वरदान पा कर पद्मावती अपने पिता के महल लौट आईं।

One day Shuk told kalkiji about the beautiful, adorned with gems and jewels the Singhal island. whose King Brihadrath was very powerful and courageous. Laxmiji was born as his daughter Padmaji, she was always in meditation because of which Lord Shiva gave her a boon along with Goddess Parvati that Padmaji will get married only to Narayan (Lord Vishnu) All the others be it humans, devatas,demons,etc think or have desire of getting married to Padmaji will turn into females. After getting this boon Padmaji returned to her father place.

रत्नों और मणियों से सजा
सिंहल द्वीप

शुक ने कल्कि जी से कहा- पद्मा जी के विवाह के लिए राजा वृहद्रथ ने स्वयंवर का आयोजन किया जिसमें तरूण आयु वाले बलवान, गुणवान, रूपवान और धनवान राजाओं को सम्मान पूर्वक आमंत्रित किया गया। सभी राजा सज-धज कर सेना सहित सिंहल द्वीप में एकत्रित हुए। स्वयंवर के दिन पद्मा जी ने तीनों लोकों को मुग्ध करने वाली रूप सज्जा के साथ सखियों सहित सभा में प्रवेश किया। ऐसी सुंदरता देख कर सभी राजा उन्हें पत्नी रूप में पाने की कामना करने लगे, और तुरंत ही महादेव के वरदान के कारण स्त्री रूप में परिवर्तित हो गए। यह देख कर अत्यंत दुखी हो कर पद्मा जी विलाप करते हुए श्री हरि भगवान का पति भाव में ध्यान करने लगीं।

shuk told Kalkiji that King Brihadrath had arranged swayamvar for daughter Padmaji,where all the young suitable men who were courageous,handsome, skilled and wealthy were called with utmost respect. All the kings along with their army gathered in Singhal island.On the day of swayamvar Padmaji dressed beautifully to impress all, walked inside the court with her female friends. On seeing her look so beautiful, all the kings present their wanted her to become their wife. The moment they thought this, all of them turned into females, because of Lord Shiva's boon to Padmaji. On seeing this Padmaji became very sad and started crying while meditating for Sri Hari as her husband.

पद्मा जी सखियों सहित
स्वयंवर सभा में प्रवेश करते हुए

कल्कि जी ने शुक से कहा– ''हे शुक, तुम मेरे संदेश वाहक बन कर सिंहल द्वीप जाओ। मेरे रूप और गुण के बारे में पद्मा जी को बता कर उन्हें आश्वासन दो।'' कल्कि जी की आज्ञा पाकर शुक सिंहल द्वीप पहुँचे और (सब कुछ जानते हुए भी) पद्मा जी से उनके दुख का कारण पूछा। पद्मा जी ने शुक को महादेव की भक्ति और पूजा से प्राप्त हुए वरदान के बारे में विस्तार से बताया। डरी हुई पद्मा जी ने शुक से कहा कि शंकर जी का वरदान मेरे लिए शाप बन गया है कि जो पुरूष मुझे काम वासना से देखता है वह स्त्री बन जाता है। इसे सुन कर शुक ने पद्मा जी को उचित प्रसंग से संतुष्ट किया।

Kalkiji told Shuk," O Shuk, you go to Singhal deep as my messenger. Tell Padmaji about how I look and what skills I have , so that she is consoled." By the wish of Kalkiji, Shuk reached Singhal deep(even after knowing everything) asked Padmaji the reason behind her sadness. Padmaji told Shuk about the boon of Lord Shiva in details. Afraid Padmaji said that shivji boon had become curse for her as the men who desires her as their wife turns into females. After listening to this Shuk satisfied Padmaji with proper reference.

पद्मा जी को वरदान देते हुए
शंकर जी एवं पार्वती जी

अपने स्वयंवर से दुखी और शोकातुर पद्मा जी को ढाढ़स बंधाने के लिए श्री कल्कि जी की आज्ञा से शुक उनके संदेश वाहक बन कर पुनः सिंहल द्वीप आए। शुक जी के आग्रह पर पद्मा जी ने शिव जी द्वारा बताई हुई भगवान विष्णु की पूजा विधि शुक को सुनाई जो भगवान की भक्ति देने वाली है। शुक ने पद्मा जी की व्यथा को दूर करते हुए उन्हें कल्कि जी के जन्म की कथा और उनके द्वारा भेजे गये संदेश को सुनाया। उसके बाद पद्मा जी ने शुक को रत्नों से सजा कर शुक से निवेदन किया कि वो कल्कि जी को आदर सहित सिंहल द्वीप लेकर आए।

On Kalkiji's direction Shuk went to Singhal deep to console Padmaji as she was sad and filled with grief after her unsuccessful marriage ceremony. On Shukji's request Padmaji narrated the way to worship Lord Vishnu as told by Lord Shiva. Shukji told Padmaji about Lord Kalki and also gave her the message which Kalkiji had sent. Padmaji felt better after hearing all this. Then she adorned Shuk and requested him to bring Kalkiji with respect to Singhal deep.

पद्मा जी को कल्कि जी का संदेश सुनाते हुए शुक देव

महादेव के वरदान के कारण डरी हुई पद्मा जी का संदेश सुन कर कल्कि जी ने तुरंत सिंहल द्वीप के लिए प्रस्थान किया। सरोवर के पास पहुँच कर कल्कि जी ने अपने आने की खबर शुक के द्वारा पद्मा जी के पास भिजवाई। अपने मनोरथ को इतना शीघ्र पूरा होते देख कर पद्मा जी अपनी सखियों के साथ उनके दर्शन करने को निकलीं। कदम्ब वृक्ष के नीचे सोए कल्कि जी के अद्भुत रूप को देख कर उनके मन में शंका हुई कि शिव जी के वरदान के कारण उन्हें देखने से कही कल्कि जी भी स्त्री न बन जाएं। तभी नींद से जाग कर कल्कि जी ने पद्मा जी की पत्नी रूप में कामना करते हुए उनसे बात की परन्तु वे स्त्री नहीं बने। इससे अत्यधिक प्रसन्न हो कर पद्मा जी ने कल्कि जी को प्रणाम किया।

After hearing the message of scared Padmaji , Lord Kalki instantly left for Singhal island. On reaching the lake, Kalkiji informed Padmaji of his arrival through Shuk. On seeing her wish being fulfilled so quickly Padmaji with her female friends went out to see Kalkiji. After seeing Kalkiji's extraordinary personality,lying under Kadamb tree Padmaji feared,' Will he also become female looking at her by the boon of Lord Shiva.'? As soon as Padmaji thought this Kalkiji woke up from his sleep and talked to her as one talks to his would be wife but Kalkiji did not turn into female. Padmaji became extremely happy and bowed to Kalkiji.

पद्मा जी सखियों सहित
कल्कि जी को निहारते हुए

पद्मा जी से विवाह के लिए कल्कि जी के आने की खबर सुनकर राजा वृहद्रथ बहुत प्रसन्न हुए। कल्कि जी का सत्कार करके आदर सहित उन्हें अपने महल में ले गए। वहाँ पर राजा वृहद्रथ ने विधिपूर्वक विवाह संम्पन्न करवाया। जो राजा स्त्रीत्व को प्राप्त हो गये थे वे भगवान श्री कल्कि जी के चरण छू कर तथा रेवा नदी में स्नान करके पुनः पुरूष बन गये।

Hearing the arrival of Kalkiji to marry Padmaji, king Brihadrath (father of padmaji) became very happy. He welcomed Kalkiji and took him to his palace where he got both of them (Kalkiji and Padmaji) married ceremoniously. All the kings who had turned into females touched the feet of Kalkiji and took bath in river Reva and became male again.

कल्कि जी एवं पद्मा जी का विवाहोत्सव

अनंत मुनि जन्म से नपुंसक थे पर महादेव की आराधना से उन्हें पुरूषत्व प्राप्त हुआ। विवाह के पश्चात उनके माता-पिता का स्वर्गवास हो गया जिससे वे बहुत दुखी रहने लगे। तब एक दिन स्वप्न में श्री हरि ने कहा कि दुखी मत हो, यह मेरी माया है। माया देखने की जिज्ञासा उन्हें पुरूषोत्तम नगर ले आई जहाँ वे कुटिया बनाकर रहने लगे। एक दिन समुद्र में डुबकी मार कर निकलने मात्र के समय में माया के प्रभाव से वे दूर किसी दूसरे नगर में एक समृद्ध ब्राह्मण के घर में पहुँच गये जहाँ उस ब्राह्मण की अति सुंदर पुत्री चारूमती से उनका विवाह हो गया। उससे उन्हें 5 पुत्र हुए। अति वैभवशाली जीवन जीते हुए वे 70 वर्ष के हो गये। उनके बड़े पुत्र के विवाह का दिन आया। वे तर्पण के लिए समुद्र तट पर गये। डुबकी मार कर निकलने पर उन्होनें देखा कि वे पुरूषोत्तम नगर के समुद्र तट पर अपनी पहली पत्नी और बांधवों के बीच में है। उनकी आयु पुन: 30 वर्ष की हो गई। दूसरी पत्नी, पांचों पुत्र, धन, वैभव सब लुप्त हो गये हैं। यह देख कर वो विक्षिप्त (पागल) जैसे हो गये तभी वहाँ पर एक परमहंस सन्यासी आए जिन्होंने अनंत मुनि को माया के विषय में बताया। उन्होंने कहा कि वह माया अक्षरी है जिसका नाश नहीं होता है। यही संसार के सभी दुखों का कारण है। केवल नारायण की भक्ति से ही इससे बचा जा सकता है। इसे सुन कर अनंत मुनि स्वस्थ हो कर पुन: हरि भक्ति में लीन हो गए।

इस कथा का सार कल्कि जी ने यह बताया है कि जो भाग्य में हैं वो भी तभी मिलता है जब कर्म किया जाता है।

Sage Anant was aeunuch, but by the blessings of Lord Shiva he became male. After his marriage his parents died because of which he became very sad. Lord Hari told him in his dream, that this is all his "Maya", because of his(sage Anant) interest to know what is "Maya" he went to city of Purushotam and started living there. One day after taking a dip in the ocean, because of the effect of "Maya" he came out at another side of the sea in a different city and reached a wealthy Brahmin's house. He got married to Brahmin's beautiful daughter Charumati, with her he had 5 sons. Living a lavish life, he became 70 years. His elder son was about to get married. He went to the sea side to offer prayers, after taking a dip in the sea When he came out he found he is back at the sea side of Purushotam city in between his old wife and friends. His age became 30 years again. His second wife, 5 sons,wealth and money all vanished. Seeing every thing gone he became mentally ill. There came a knowledgeable sage who told Sage Anant about "Maya". The Sage told Sage Anant that this "Maya" cannot be destroyed. This "Maya" is the reason for all the sorrows of this world. Only by devoting/praying to Lord Narayan, we can free ourselves from "Maya". After listening to this Sage Anant became healthy again and started meditating for Lord Hari. Kalkiji told that the moral of the story is that whatever is there in your destiny you will get that only if you work towards it.

कल्कि जी अनंत मुनि की कथा का सार समझाते हुए

पद्मा जी से विवाह के बाद कल्कि जी ने संभल ग्राम जाने की इच्छा प्रकट की। देवराज इंद्र ने कल्कि जी की इच्छा समझ कर देवशिल्पी विश्वकर्मा जी को बुलाकर संभल ग्राम को अपनी नगरी अमरावती के समान सजाने की आज्ञा दी। वहाँ पर स्वस्ति, हंस, गरूड़, शेर आदि के मुख की आकृति वाले अनेक सुंदर भवन बना कर विश्वकर्मा जी ने अपनी कला दिखाने में कोई कसर नहीं छोड़ी। सभी ऋतुओं में सुख देने वाला रमणीक संभल ग्राम कल्कि जी के लिए बनाया गया।

After getting married to Padmaji,Kalkiji expressed his interest to return to village Sambhal. Lord Indra understood what Kalkiji wanted to say, so he called Vishwakarma(architect of devatas) and asked him to decorate Sambhal gram like his city Amravati. Vishwakarmaji created beautiful figures of swasti, swan, garun, lion etc and showed his extraordinary skill. The village of Sambhal was reconstruted beautifully for Lord Kalki to suit all the seasons.

देव शिल्पी विश्वकर्मा द्वारा
निर्मित संभल ग्राम

भगवान कल्कि जी ने अपने पिता विष्णुयश की अश्वमेघ यज्ञ करने की इच्छा को देखकर बौद्धों की नगरी कीकटपुर पर सेना सहित आक्रमण किया। यहाँ के लोग जाति, धर्म और रीति-रिवाज को न मान कर केवल शारीरिक सुख को ही प्रधानता देते थे। बौद्धों का राजा जिन भी अपनी विशाल सेना के साथ सांड पर सवार हो कर लड़ने आया। घमासान युद्ध हुआ जिसमें जिन की मौत हो गयी।

Feeling the intention of his father Vishnuyash to perform Ashavamegh yagna, Kalkiji attacked the city of Bodhas. This city was inhabitated by people who did not believe in any caste, religion or rituals and were only interested in physical gains and happiness. The King of Bodhas Zin came on bull, along with his large army to fight. The war was ferocious in which King Zin was killed.

बौद्धों की नगरी कीकटपुर पर आक्रमण करते हुए कल्कि जी

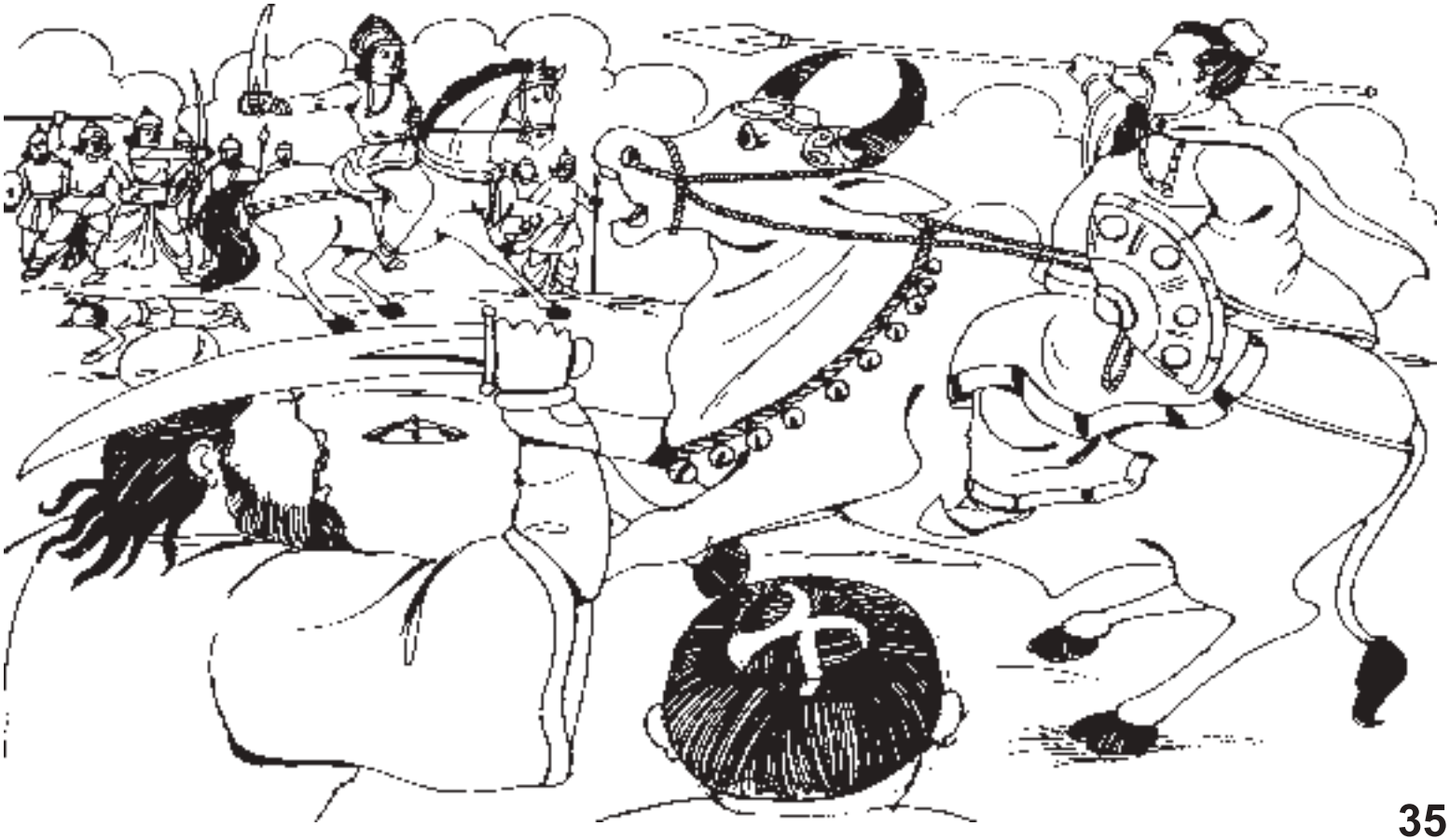

युद्ध में कल्कि जी ने जिन के साथ-साथ सभी बौद्धों और म्लेच्छ शक्तियों का नाश कर दिया। उनकी विचलित स्त्रियां बोलीं जब आपने हमारे पतियों को मार डाला तो हमारा भी नाश हो चुका है। अतः हम आपका भी नाश करेंगे। यह कह कर उन्होंने अस्त्र-शस्त्र से कल्कि जी पर प्रहार करना चाहा परन्तु वे सफल नहीं हुईं। सभी अस्त्रों-शस्त्रों के देवता साक्षात् प्रगट हो कर कल्कि जी का गुणगान करने लगे। यह देख कर म्लेच्छ स्त्रियां भी कल्कि जी की शरण में चली गईं और उनसे ज्ञान पाकर परम पद को प्राप्त हुईं।

During the war with demon powers(bodhas etc) Kalkiji killed them along with Zin. After their death, their horroified wives came to fight Kalkiji with various weapons. But the weapons failed to stike Kalkiji instead their respective gods controlling the weapons appeared and started praising Kalkiji. On seeing this the wives of demon powers also took shelter under the grace of Lord Kalki and attained moksha.

म्लेच्छ स्त्रियाँ कल्कि जी को
युद्ध के लिए ललकारती हुईं

बौद्धों और म्लेच्छों का कीकटपुर में नाश करके कल्कि जी स्वजनो और सेना सहित वक्रतीर्थ में रह रहे थे। उस समय कुछ मुनि वहाँ आए जो कुंभकर्ण की पोती और राक्षस कालकंज की पहाड़काय पत्नी कुथोदरी के आतंक से त्रस्त थे। उनका दुख देखकर कल्कि जी सेना सहित हिमालय के उस स्थान पर गए। सेना की एक टुकड़ी को लेकर कल्कि जी ने उस पर आक्रमण किया जिससे क्रोधित होकर भयंकर आवाज निकालते हुए कुथोदरी ने कल्कि जी को उनकी सेना सहित निगल लिया। कल्कि जी तलवार से उसका पेट फाड़ कर सेना सहित बाहर निकले। कुथोदरी की मौत के बाद कल्कि जी ने उसके पहाड़काय बेटे विकंज का भी ब्रह्मास्त्र से सिर काट कर मुनियों को अभयदान दिया। फिर कल्कि जी हरिद्वार में गंगा तट के पास रहने लगे जहाँ कुछ दिव्य मुनि और तपस्वी उनके दर्शनों को आए।

After killing the demon powers(bodhas etc) in kikatpur,Kalkiji was residing in Vakratirtha with dignified people and his army. There few sages visited Kalkiji and told him about the terror Kuthodari was spreading who was the grand daughter of Kumbhkarna and wife of demon kalkanj. After heraing the sad condition of the sages, Kalkiji decided to end their sorrow and went with his army near himalaya to that place. Kalkiji attacked her with apart of his army because of which she became angry. Making terrfying sounds Kuthodari gulped Kalkiji along with his army. Kalkiji teared her stomach with his sword and came out with his army. After killing kuthodari, Kalkiji also killed his huge size son vikanj with his brahmastra and saved the lives of the sages. After this Kalkiji went to reside in Haridwar on the banks of river Ganga where few sages came to visit him.

कल्कि जी भयंकर राक्षसी
कुथोदरी का वध करते हुए

तपस्वी मरू से राम कथा सुनकर कल्कि जी बहुत आनन्दित हुए। तपस्वी देवापि भी चन्द्रवंशी राजा निकले। कल्कि जी ने दोनों को तपस्वी वेष छोड़ कर राजसी वेष धारण कर विवाह करने की आज्ञा दी। उसी समय अत्यंत तेजस्वी ब्राह्मण के रूप में सत्युग (कृतयुग), तथा दीन-हीन अवस्था में धर्म अपने परिवार के साथ आया। दोनों ने ही कलि का नाश कर सत्युग की स्थापना करने की प्रार्थना की क्योंकि सत्युग के स्थापित होते ही धर्म अपने पूरे परिवार के साथ स्वयं स्थापित हो जाता है। उनकी प्रार्थना पर कल्कि जी ने एक विशाल सेना लेकर कलि की नगरी विशसन पर आक्रमण किया। घमासान युद्ध हुआ जिसमें शक्, कम्बोज, म्लेच्छ, बर्बर शक्तियों के साथ कलि और उसके पूरे परिवार का नाश (पलायन) हुआ।

Kalkiji was very happy listening Ram Katha from Manu. Devapi was also found to be Chandravanshi King. Hence Kalkiji ordered both them to leave their sage attire and wear royal dress of kings and get married. At that time a sage with very positive aura entered, he was “Satyug”, with him entered in a very bad condition”Dharma” along with his family. Both requested Kalkiji to kill kaliyug and establish Satyug because as soon Satyug gets established Dharma with his family will automatically be established. On their (Satyug and Dharma) request Kalkiji attacked the kingdom of kali, Vishasan, with a huge army. After a ferocious battle, in which Shak, Kamboj, Mlech, Barbr(all these are evil powers) along with Kaliyug his entire family was killed (ran away).

कल्कि जी कलियुग पर
प्रहार करते हुए

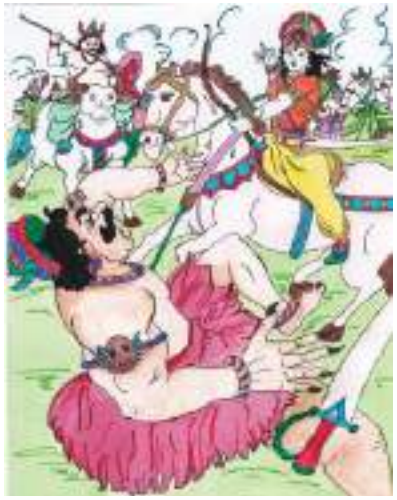

कलि के नाश के बाद कल्कि जी ने भल्लाट नगर के राजा शशिध्वज पर आक्रमण किया। राजा शशिध्वज अत्यंत ही बलशाली और महान योद्धा होने के साथ-साथ नारायण के परम भक्त भी थे। दोनों में भयंकर युद्ध हुआ। अपनी ही इच्छा से कल्कि जी शशिध्वज के प्रचंड प्रहार से मूर्च्छित हो गए। उन्हें मूर्च्छित देख कर धर्म और सतयुग उनकी मदद को आगे आए। राजा शशिध्वज ने दोनों को ही अपनी कांख में दबा लिया और मूर्च्छित कल्कि जी को गोद में उठा कर अपने महल में ले गए। महल में पहुंच कर उन्होंने देखा कि उनकी पत्नी रानी सुशान्ता नारायण के मंदिर में अन्य वैष्णवी नारियों के साथ नारायण का गुणगान कर रही हैं। राजा शशिध्वज ने अपनी पत्नी सुशान्ता को कल्कि जी, धर्म और सतयुग के बारे में बताया उसे सुनकर रानी प्रसन्नता से नृत्य करने लगी। उसके बाद उन्होंने अत्यंत भक्ति भाव से कल्कि जी की स्तुति की उसे सुनकर प्रसन्न होकर कल्कि जी अपनी मूर्च्छा को त्याग कर उठ खडे हुए। राजा शशिध्वज ने रानी सुशान्ता की इच्छानुसार अपनी पुत्री रमा का विवाह धूमधाम से कल्कि जी के साथ कर दिया।

After killing Kali, Kalkiji attacked King Shashidwaj of Bhallat. King Shashidwaj was a very powerful and great fighter, also he worshipped Lord Narayan whole heartedly. The war between them was very ferocious. Lord kalki knowingly fainted when Shashidwaj attacked him. Seeing Lord Kalki fainted "Dharma and Satyug" came forward to help him, but Shashidwaj tied both of them in his armpit and lifted kalkiji in his arms and took them to his palace. There he saw, his wife Queen Sushanta along with other ladies chanting songs of Lord Narayan in her temple. When Shashidwaj told his wife Sushanta about Dharma, Satyug and Kalkiji. She became happy and started dancing. After this with lot of faith she sang for kalkiji listening to which Lord Kalki got up from his fainted situation. Then King Shashidwaj fulfilled his wife's wishes and married their daughter Rama to Kalkiji.

राजा शशिध्वज की पत्नी रानी सुशांता को विष्णु जी की भक्ति करने से कल्कि जी के दर्शन हुए

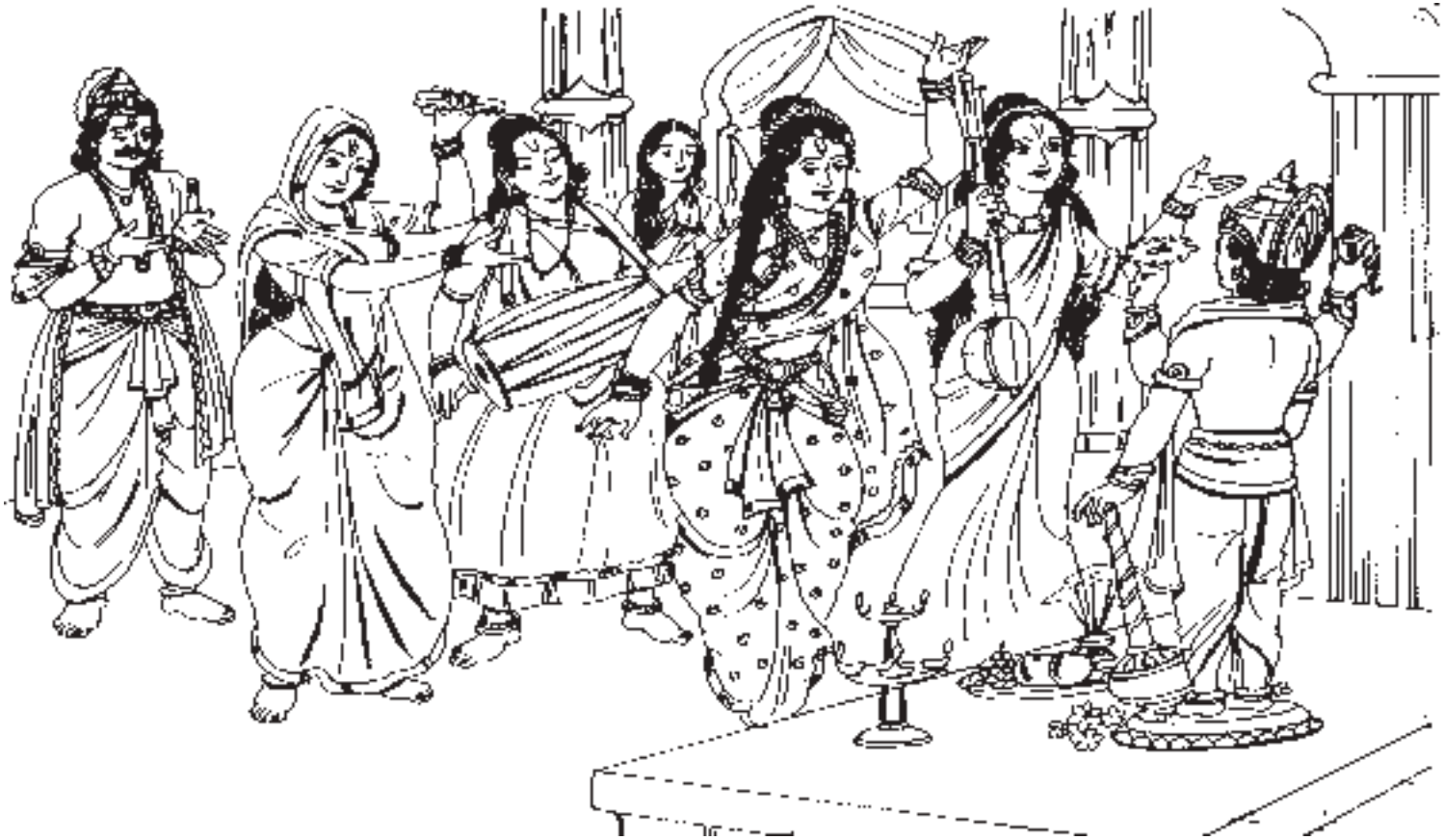

राजा शशिध्वज के पत्नी सहित वन जाने के पश्चात कल्कि जी ने आकाशवाणी के अनुसार शुक के साथ बड़ी मुश्किल से कांचीपुरम नगरी में प्रवेश किया। उस नगरी में चारों तरफ विष कन्याएं दिखाई पड़ रही थीं। उन्हीं में से उन्हें एक बहुत सुन्दर कन्या दिखाई पड़ी। कल्कि जी के पूछने पर उस कन्या ने कहा कि वो चित्रग्रीव नामक गंधर्व की पत्नी सुलोचना है जिसने अपनी सुंदरता और यौवन के अहंकार में यक्ष मुनि की कुरूपता का मजाक उड़ाया था। जिससे क्रोधित हो कर मुनि ने उसे विषकन्या बनने का शाप दे दिया था। परंतु कल्कि जी के दिव्य दर्शनों से वो आज शाप मुक्त हो कर विमान पर बैठ कर अपने लोक में जा रही है।

After Shashidwaj and his wife left for forest, Kalkiji entered the city of Kanchipuram as predicted, with his parrot Shuk after great difficulty. There were lot of poisonous female serpents. Amongst them they saw a very beautiful female serpent. On asking, the female informed Kalkiji that she was the wife of Gandharv Chitragriv, who in her pride mocked sage Yaksha's ugliness thinking that she is extremely beautiful. Because of this she was cursed by the sage to become poisonous female serpent. But on seeing Kalkiji, her curse vanished and she is returning to her place in a divine plane.

कल्कि जी के दर्शन से
विषकन्या शाप मुक्त होते हुए

रमा जी और पदमा जी के साथ कल्कि जी के राजसिंहासन पर बैठने के बाद धर्म और सत्युग की स्थापना हुई। उस समय उनके पिता विष्णुयश ने उनसे संसार की भलाई करने वाले देवताओं के लिये यज्ञ करने को कहा। कल्कि जी ने विशिष्ट ऋषियों और वेदों के प्रकाण्ड विद्धानों को आमंत्रित कर गंगा और यमुना के मध्य एक महायज्ञ का अनुष्ठान सम्पन्न किया। यज्ञ के पश्चात सभी को यथोचित दान-दक्षिणा, वस्त्र, अन्न इत्यादि देकर संतुष्ट किया। उसी समय तीर्थों का भ्रमण करते हुए गुरू परशुराम भी संभल ग्राम पहुँचे। उनको भी कल्कि जी ने उचित आदर सत्कार करके पूर्ण संतुष्ट किया। परशुराम जी ने उन्हें रूक्मिणी व्रत की विधि बताई।

After kalkiji sat on the throne with Ramaji and Padmaji ,"Dharma and Satyug " was established Lord kalkiji's father Vishnuyash asked him to do yagna for the devats who worked for the welfare of this world. kalkiji invited all the sages and master of vedas(extremely knowledgeable men) and performed yagna in the middle of Ganga and Yamuna. After the yagna he gave gifts,clothes, food accordingly to the people present. During the same time Guru Parshuram who was visiting all the divine places came to village Sambhal. kalkiji also gave his due respect to parshuram and he told kalkiji about Rukamani Vrat.

कल्कि जी पद्मा जी
रमा जी सहित

दैत्यराज वृषपर्व की पुत्री शर्मिष्ठा अपनी सखियों और दैत्य गुरू शुक्राचार्य की पुत्री देवयानी के साथ सरोवर में स्नान कर रही थी। उसी समय उन्होंने महादेव और पार्वती जी को वहाँ देखा। उन्हें देखकर शीघ्रता से सब बाहर निकल कर अपने अपने वस्त्र पहनने लगीं। हड़बड़ी में देवयानी ने शर्मिष्ठा के वस्त्र पहन लिये जिससे क्रोधित हो शर्मिष्ठा ने देवयानी को कुँए में फिंकवा दिया। उसी समय नहुष के पुत्र ययाति वहाँ से गुजरे और उन्होने देवयानी को कुँए से बाहर निकाला। देवयानी से सारी बातें सुन कर शुक्राचार्य ने दंड स्वरूप शर्मिष्ठा को देवयानी की दासी बना दिया। वन में घूमते हुए एक दिन शर्मिष्ठा को ऋषि विश्वामित्र दिखाई पड़े जो कई स्त्रियों को रूक्मिणी व्रत करवा रहे थे। शर्मिष्ठा ने भी उन स्त्रियों से व्रत करने की इच्छा प्रगट की जिससे दया पूर्वक उन स्त्रियों ने उसे भी पूजा सामग्री दे कर उससे व्रत सम्पन्न करवाया। व्रत करने से शर्मिष्ठा को पति, पुत्र, वैभव इत्यादि प्राप्त हुए।

Sharmistha, daughter of King of demons Vrishparv along with friends and Devyani, daughter of Guru of demons Shukracharya were taking bath in a lake. There they saw Lord Shiva and Goddess Parvati seeing them they quickly got out of the lake and started wearing their clothes. By mistake Devyani wore the clothes of Sharmistha , because of which she got angry and got Devyani thrown in the well. Yayati, son of Nahush was passing from their and he helped Devyani come out of the well. After listening to the story of Devyani Shukracharya punished Sharmistha and made her Devyani's maid. One day while roaming in the forest Sharmistha saw Vishwasmitra who was helping many women to perform Rukmani Vrat. On request of Sharmistha ,out of pity they gave all the things required to do the vrat to her. After doing the Vrat she got husband, son, prosperity and lot of other things.

क्रोधित देवयानी

एक दिन समस्त देवतागण ब्रह्माजी के साथ संभल ग्राम में कल्कि जी के दरबार में पहुँचे, यहाँ पर दिव्य रत्नों और मणियों से सुशोभित कल्कि जी अपनी अलौकिक छटा के साथ विराजमान थे। सभी ने पूर्ण भक्ति-भाव से कल्कि जी की स्तुति की और कहा कि आपने पृथ्वी पर धर्म और सत्युग की स्थापना की है। चारों तरफ सुख और शान्ति है आपके अवतार धारण करने का लक्ष्य पूर्ण हो गया है। अब आप कृपा करके अपने बैकुण्ठ लोक के लिए प्रस्थान करें। ऐसा सुनकर कल्कि जी ने हिमालय पर्वत पर जा कर अपना दिव्य चतुर्भुज रूप धारण कर बैकुण्ठ लोक के लिए प्रस्थान किया।

One day all the devtas along with Brahmaji went to village Sambhal in Kalkiji's court where he was sitting adorned with gems and precious stones. All the devtas sang praises for Lord kalki and told that he has established Dharma and Satyug on Earth. Everywhere there is peace and happiness and you have fulfilled your goal as Lord Kalki. Now its time to return to Baikunth lok. After listening to this, Lord Kalki went to himalayas and took his almighty form as Lord Vishnu and returned to Baikunth.

भगवान श्री कल्कि के दरबार में
समस्त देवी-देवता

अब तो जगद्गुरु शंकराचार्य जी का भी आवाह्न कि भगवान श्री कल्कि को मंदिरों में प्रतिष्ठित करके सत्युग की प्रार्थना करें

बैजनाथ धाम के वी आइ पी लाउंज में

कांशी विश्वनाथ, अक्षयवट वाराणसी

गौरी शंकर मंदिर चांदनी चौक दिल्ली

गीताश्रम, ऋषिकेश उत्तराखंड

माँ ललिता मंदिर नैमिषारण्य तीर्थ

कालका जी मंदिर, नई दिल्ली

बड़ी सीतला मां मंदिर दशाश्वमेध घाट वाराणसी

दुर्गा कुंड वाराणसी

महाविष्णु के अंतिम अवतार भगवान श्री कल्कि जिनके प्रगट होने से पहले सिद्धपीठों, शक्तिपीठों, ज्योतिर्लिंगों एवं धामों में मूर्तियाँ लग रही हैं

यह कलियुग के डेरों पर कल्कि जी की विजय पताका है—स्वप्नानुभव

श्री अग्रोहा धाम, हिसार, हरियाणा
महाराजा अग्रसेन के बराबर,
17 जुलाई 2013

बैद्यनाथ धाम, वी.आई.पी. स्थल,
देवघर 19 जनवरी 2014

गंगोत्री धाम,
जहाँ से माँ गंगा का उद्गम हुआ है
हिमाचल 18 अप्रैल 2018

यमुनोत्री धाम,
हिमाचल 14 मई 2018

द्वारकाधीश धाम
31 अगस्त 2019

माँ योगमाया मंदिर, महरौली
कुतुबमीनार, दिल्ली 1997

माँ ललिता मंदिर,नैमिषारण्य तीर्थ
सीतापुर 19 फरवरी 2010

दुर्गा कुण्ड, माँ कूष्मांडा परिसर
कांशी वाराणसी 19 अक्टूबर 2012

माँ शीतला मंदिर, दशाश्वमेध घाट
वाराणसी 12 मई 2013

माँ विंध्यवासिनी, विंध्याचल
मिर्जापुर, 13 मई 2013

माँ पूर्णागिरी माता मंदिर
कपुर, उत्तराखंड 21 फरवरी 2018

कालका जी मंदिर, नई दिल्ली
जनवरी, 2004

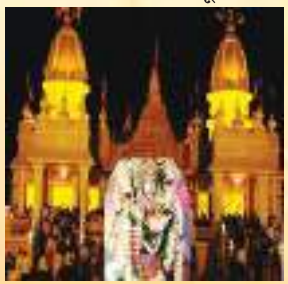

बैसाखी मन्दिर साल्ट लेक,
कोलकाता जुलाई 2007

श्री शिव शक्ति मंदिर
दतिया 29 नवंबर 2015

माँ तारापीठ मंदिर
पश्चिम बंगाल 21 फरवरी 2015

यह कलियुग के डेरों पर कल्कि जी की विजय पताका है—स्वप्नानुभव

श्री कल्कि विष्णु मन्दिर (रानी वाला)
सम्भल 300 वर्ष पूर्व

नागेश्वर महादेव मंदिर,
अयोध्या (यू.पी.) 26 अप्रैल 2014

दानघाटी मंदिर, गिरिराज जी
गोवर्धन (यू.पी.)
19 नवंबर 2011

ज्योतिसर कुरूक्षेत्र जहाँ भगवान श्रीकृष्ण ने
अर्जुन को गीता का ज्ञान दिया था
6 मई 2018

श्री हनुमान मन्दिर,
कनॉट प्लेस, नई दिल्ली
20 जून, 2011

अमृत परिसर, ब्रजघाट
गढ़गंगा, 15 जुलाई 2007

श्री गौरी शंकर मंदिर, चांदनी चौक
दिल्ली 9 नवंबर 2009

कांशी विश्वनाथ मंदिर, अक्षय वटवृक्ष,
वाराणसी, यू.पी. मार्च 2014

गीताश्रम,चोटी वाले के सामने
स्वर्गाश्रम रोड, ऋषिकेश 29 जून 2014

माँ राणी सती दादी मंदिर
काकुड़ गाची ,कोलकाता
4 अगस्त 2011

छोटा हरिद्वार गंग नहर
यू.पी. 19 मई 2016

गोलू देव महाराज मंदिर, घोड़ा खाल
भुवाली, 14 जनवरी 2014

श्री कल्कि धाम
बलुआ घाट, रामनगर कांशी
वाराणसी 14 अगस्त 2016

हनुमानगढ़ी मंदिर
अयोध्या
20 अक्टूबर 2019

काली मंदिर
गोरखपुर रेती चौक
5 फरवरी 2017

5 फरवरी 2017 को योगी आदित्यनाथ जी द्वारा गोरखपुर में कल्कि जी की मूर्ति स्थापना के मात्र 49 दिनों बाद 26 मार्च 2017 को योगी आदित्यनाथ उत्तरप्रदेश के मुख्यमंत्री पद पर आसीन हुए

5 फरवरी 2017 को सांसद योगी आदित्य नाथ काली मंदिर गीता प्रेस के बराबर भगवान श्री कल्कि की मूर्ति स्थापना के उपरांत आरती करने के बाद दिल्ली से गए भक्तो के साथ चर्चा करते हुए एवं सुश्री राधा बथवाल (जिनके अथक प्रयासों से यहाँ कल्कि जी की मूर्ति स्थापना हुई)

कल्कि भगवान का
प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव
श्री भरत जी की पावन भूमि नंदीग्राम में
दिनांक 15 दिसंबर 2019 को

म. श्री बृजमोहन दास जी महाराज, म. श्री बलराम दासजी महाराज
म. हनुमान दासजी महाराज, श्री भरत जी का प्राचीन मन्दिर
नन्दीग्राम भरतकुण्ड - अयोध्या

भगवान श्री कल्कि का अनुभवगम्य भव्य मंदिर

उद्देश्य-कलियुग की बुराइयों व अधर्मी शासकों के विनाश तथा पाप के अंत के लिए है।

भव्य मंदिर का वर्णन- यहाँ फव्वारों-उद्यानों-प्रकाश ध्वनि-अग्नि तथा जल द्वारा भव्यता प्रदर्शित होगी। इसके चारों ओर जल पोत (शूटिंग वॉटर) चलाई जाएंगी। देवशिल्पी विश्वकर्मा ने जिस प्रकार संभल ग्राम को अदभुत तथा अलौकिक बनाया था उसी प्रकार से इसे सजाने का पूरा प्रयास किया जाएगा। यह प्रदर्शन नवीनतम, पाश्चात्य प्रौद्यौगिकी के उपयोग से पूरी होगी। इसमें अदभुत लेजर किरण भी मिली होंगी। यहाँ सत्संग रूपी विशेष कथा में पाप और पुण्य द्वंद को दर्शाया जाएगा। दर्शकगण उद्यान में फव्वारा परिसर के चारों तरफ बैठेंगे जहाँ वो एक घंटे की अवधि का कार्यक्रम देख पाएंगे जिसमें कलियुग का विशाल शक्तिशाली रूप धारण करना एवं श्री कल्कि का उसके विनाश का विशाल युद्ध दर्शाया जाएगा जिसमें कलियुग की हार होगी। यह सारा साहसिक क्रिया कलाप जल ध्वनि तथा प्रकाश द्वारा दिखाया जाएगा।

गूगल के नक्शे पर भगवान श्री कल्कि के मंदिर

भारत के 29 प्रदेशों में से 19 प्रदेशों मे भगवान श्री कल्कि की मूर्ति स्थापना हो चुकी है। जो भी जिज्ञासु और भक्त कल्कि जी की अन्य प्रदेशों में मूर्ति स्थापना करवाना या करना चाहते है वे हमारे साथ इस कार्य में आगे आए और महाभाग्यवान बनें.

दिल्ली	–	77 मंदिर
उत्तर प्रदेश	–	43 मंदिर
पश्चिम बंगाल	–	22 मंदिर
उत्तराखंड	–	16 मंदिर
हरियाणा	–	10 मंदिर
राजस्थान	–	6 मंदिर
नेपाल	–	4 मंदिर
बिहार	–	3 मंदिर
मध्य प्रदेश	–	2 मंदिर
महाराष्ट्र	–	2 मंदिर
हिमाचल	–	2 मंदिर
पंजाब	–	1 मंदिर
जम्मू	–	1 मंदिर
उड़ीसा	–	1 मंदिर
सिक्किम	–	1 मंदिर
छत्तीसगढ	–	2 मंदिर
झारखंड	–	1 मंदिर
गुजरात	–	1 मंदिर
मेघालय	–	1 मंदिर

कल्कि जी की मूर्ति स्थापनाओं एवं शोभा यात्राओं की झलकियाँ

ग्रीन पार्क

गैंगटॉक

अग्रोहा धाम

रोहिणी

कुरूक्षेत्र

मुक्तेश्वर

गंगोत्री

दिल्ली

इस्कॉन मंदिर ईस्ट ऑफ कैलाश नई दिल्ली

इस्कॉन मंदिर बुद्ध मार्ग पटना-1

''इधर-उधर बेकार घूमते बच्चे संस्कारवान बनने लगे'' - नगरपालिका अध्यक्ष सुश्री रेखा शर्मा

20 जनवरी 2017 को श्री कल्कि धाम (रामनगर वाराणसी) मंदिर में बाल वाटिका में विशिष्ट कार्यों में रत 60 बालक-बालिकाओं में से चयन किए गए बच्चों को पुरस्कार देते हुए

''आज रविवार को हम कल्कि धाम में उपस्थित हुए है। मामाजी ने जो मंदिर कल्कि धाम यहाँ बनवाया है वहाँ हर हफ्ते कल्कि बाल वाटिका तो होती ही है, यह हमें जानकारी थी। आज हमें यहाँ आमंत्रित किया गया है, तो हमें यहाँ के बच्चों का कार्यक्रम देखकर बहुत अच्छा लगा। बच्चों ने एक नाटक (बिल्ली दस लाख की महल एक रुपए का) नृत्य (जहाँ पे कल्कि नाम उदय हो) करके दिखाया। मुझे यह देखकर बहुत अच्छा लगा कि जो बच्चे इधर-उधर बेकार घूमते थे आज वह यहाँ देवी देवताओं की पूजा करना सीख गए हैं, साबुन बनाना सीख गए हैं, अच्छे संस्कारों के साथ नृत्य, भजन सब कुछ सीख रहे हैं। हमारी शुभकामनाएं आप सभी के साथ हैं। मामाजी आज यहाँ नहीं है लेकिन जहाँ भी हैं, हम उन्हें बधाई देते हैं साथ ही भविष्य में जो भी सहयोग हो सकेगा हम अवश्य राम नगर बाल वाटिका को देंगे।''

तरह तरह के नहाने के साबुन

बाल वाटिका के बच्चों के द्वारा गौ के घी एवं गंगाजल से बना साबुन जो इन्हें कार्यशालाओं में आत्मनिर्भर बनाने हेतु सिखाया जाता है

श्री कल्कि बाल वाटिका 6 साल पहले

श्री कल्कि बाल वाटिका Presents

कल्कि में महाविष्णु का 10वां अवतार

कल्कि 2013 के लिए कल्कि बाल वाटिका के बालक बालिकाएं
नाटक एवं संगीत निर्देशकों को ऑडिशन देते हुए

श्री कल्कि बाल वाटिका पैनल स्वागत कक्ष संभालते हुए

कल्कि 2013 के इवेंट में कल्कि लीला को जीवंत करते बच्चे

कल्कि 2013 का मंचन 600 से अधिक दर्शकों के बीच

कल्कि जी मेरे दोस्त-जय श्री कल्कि महोत्सव 30 दिसंबर 2018

विवेकानंद कॉलेज दिल्ली

16 बाल वाटिकाओं के 205 बच्चे जब उत्सव के अंत में एक साथ स्टेज पर आए तो उन सभी बच्चों का जोश, उत्साह और इस उत्सव का हिस्सा बनने की खुशी उन सब के चेहरों पर साफ नजर आ रही थी। इन सभी बच्चों में बाल श्री कल्कि ही थे तभी ये कार्यक्रम इतना सफलता पूर्वक हुआ। संस्कारों की पाठशाला- प्रसन्न मुद्रा में संचालिकाएं

कल्कि जी मेरे दोस्त-जय श्री कल्कि महोत्सव 5 जनवरी 2019 कल्कि बाल वाटिका रुद्रपुर (नैनीताल) और संभल

आभार की महिमा लघु नाटिका का मंचन

मंच पर रिहर्सल करते हुए

श्री कल्कि बाल वाटिका के रूद्रपुर, संभल एवं दिल्ली के बच्चों ने कल्कि साहित्य स्टॉल रूद्रपुर के गांधी मैदान में दो दिन के लिए लगाया जहाँ लोगों ने कल्कि जी का साहित्य खरीदने में काफी रूचि दिखाई

कल्कि जी मेरे दोस्त-जय श्री कल्कि महोत्सव 30 मार्च 2019 कल्कि बाल वाटिका असरोही

कल्कि जी मेरे दोस्त-जय श्री कल्कि महोत्सव 14 अप्रैल 2019 कल्कि बाल वाटिका कोलकाता

कल्कि जी मेरे दोस्त-जय श्री कल्कि महोत्सव 26 मई 2019 कल्कि बाल वाटिका दिल्ली

विभिन्न कल्कि बाल वाटिका के बच्चों द्वारा बनाया गया कल्कि जी का कार्फ्ट वर्क

विभिन्न कल्कि बाल वाटिका के बच्चों द्वारा की गई प्रस्तुति

कल्कि जी मेरे दोस्त-जय श्री कल्कि महोत्सव 27 अप्रैल 2019 कल्कि बाल वाटिका शिमला

कल्कि जी मेरे दोस्त-जय श्री कल्कि महोत्सव 21 जुलाई 2019 कल्कि बाल वाटिका कोलकाता

कल्कि जी मेरे दोस्त-जय श्री कल्कि महोत्सव 15 अगस्त 2019 कल्कि बाल वाटिका बाराबंकी

श्री कल्कि बाल वाटिका के बढ़ते कदमों की झलकियाँ 2018 में

रामनगर बाल वाटिका में पेंटिंग प्रतियोगिता

देवी भवन हिसार बाल वाटिका में बच्चे हवन करते हुए

राजपुर रोड बाल वाटिका में बच्चे पेंटिंग करते हुए

रोहिणी बाल वाटिका में पानी का हवन करते हुए

बाराबंकी में स्कूल के बच्चे पेंटिंग करते हुए

कृष्णा नगर सनातन धर्म स्कूल में प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता

अयोध्या बाल वाटिका के बच्चे आठों पहर का प्रणाम करते हुए

रामनगर कल्कि धाम वाराणसी में 14 अगस्त 2016 को बाल वाटिका के बच्चों ने मिलकर विभिन्न कार्यक्रमों के साथ महाभंडारे का आयोजन कर कल्कि जी की मूर्ति स्थापना की पहली वर्षगांठ मनाई

असरोही से भारती मिश्रा श्री राम सेवा संस्थान, निंबाहेड़ा, जिला चित्तौड़गढ़ के गौशालाके बच्चों को कल्कि भगवान के बारे में बताते हुए

हावड़ा कोलकाता बाल वाटिका के बच्चे ड्रेस कोड के साथ कार्यशाला करते हुए

करनाल बाल वाटिका के बच्चे कल्कि जी की आरती करते हुए

शिमला बाल वाटिका कार्यशाला

नोएडा संस्कार केन्द्र में कलैंडर लिए हुए

कोलकाता हिंदी हाई स्कूल के बच्चे कल्कि जी को आठ बार की नमस्कार करते हुए

सब्जीमंडी, दिल्ली के बच्चे हवन करते हुए

माँ बगुलामुखी के धाम दतिया में बाल वाटिका

पटना बाल वाटिका के बच्चे महामंत्र प्रतियोगिता के बाद पुरस्कार जीतकर प्रसन्न मुद्रा में

महरौली बाल वाटिका में बच्चे हवन करते हुए

श्री कल्कि बाल वाटिका 30 साल पहले

महामंत्र का जाप एवं संकीर्तन करते हुए

कैन-कैन चाँदनी चौक दिल्ली में प्रतिमास
श्री कल्कि सहस्त्रनाम यज्ञ करते हुए

श्री कल्कि आरती करते हुए

सन् 2000 में रशियन एंबेसी में आयोजित
भजन संध्या में मंच पर गाते हुए बच्चे

महामंत्र जाप द्वारा कल्कि जी की पुकार

रशियन एंबेसी में आयोजित महोत्सव में
श्री कल्कि पद्मानाथ का भव्य मंचन

प्रेरणादायी लघु नाटिका
करते हुए बच्चे

कल्कि पुराण पर आधारित कल्कि जी
की जीवन लीला का मंचन

कल्कि जयंती में पुरस्कार वितरण समारोह में सरोज गुप्ता श्री रवि शंकर जी
को कल्कि जी के भजनों की सीडी बनाने के लिए सम्मानित करते हुए

इनके सतत प्रयासों से कल्कि पुराण
सरल हिंदी इंग्लिश में समाज को मिला

बच्चे को यदि उपहार नहीं दिया तो कुछ समय रोएगा लेकिन संस्कार नहीं दिए तो जीवन भर रोएगा

अंग्रेजी सभ्यता से प्रभावित होकर आज संयुक्त परिवार (ज्यांइट फैमिली) खत्म हो गए हैं। बच्चे एकल परिवार (सिंगल फैमिली) में रहते हैं जहाँ माता का प्रभाव अधिक होता है। बच्चों की पहली पाठशाला उनका घर होता है और उनकी पहली अध्यापिका माँ होती है। बच्चे असीम संभावनाओं के भंडार होते हैं। माँ की पैनी दृष्टि ही उन संभावनाओं को उजागर करवा सकती है। माँ ही बचपन से उन्हें धर्म, अधर्म, सत्य, असत्य, अच्छे और बुरे के बारे में बताती है। इसमें सावधानी हटी तो दुर्घटना घटी।

उदाहरण स्वरूप इस संदर्भ में हम महाभारत की गांधारी और कुंती की तुलना करते हैं। कौरवों की माता गांधारी ने बेशक अपनी आंखों पर पट्टी बांध कर पति धर्म तो निभाया लेकिन उसका मुख्य ध्येय बच्चों (दुर्योधन-दुशासन) के प्रति खूब खिलाने, सुख सुविधाओं के प्रति ही केंद्रित रहा। सही संस्कार नहीं मिलने पर बच्चे धन-संपदा-ऐश्वर्य के मद में अहंकारी, ईर्ष्यालु और व्यसनी बन गए। अंततोगत्वा सारे परिवार का अंत दुखदायी रहा।

दूसरी तरफ पांडवों की माता कुंती ने अपने बच्चों में प्यार, धैर्य, कर्तव्य, निष्ठा के संस्कार दिए जिससे अंत तक वह जीवन में कठिनाइयों से जूझने के बाद भी सुखदायी रहे। आज भी पांचों पांडव पुत्रों के साथ माँ कुंती जानी जाती है।

श्री कल्कि बाल वाटिका का यही प्रयास है कि संस्कार कार्यशालाओं द्वारा बच्चों को खेल-खेल में प्राचीन दादा-दादी, नाना-नानी कहानियों द्वारा हिंदू संस्कृति का ज्ञान देना और उन में संस्कार रोपण करना ताकि उनके जीवन व परिवार से उदासीनता हमेशा दूर रहे और वह इस वैज्ञानिक जगत में नए अविष्कार करके धन, संपदा, भक्ति, ज्ञान, ऐश्वर्य के साथ जीवन जिएं जो आज के युग की आवश्यकता है।

- मामाजी

दिल्ली व दिल्ली से बाहर चल रही बाल वाटिकायें

मुख्य शाखा: 1903, चांदनी चौक, दिल्ली-110006
संरक्षक: मामाजी-9312533445 अध्यक्ष: योगेश गुप्ता-9311033445
यहीं के बालक बालिकाएं समस्त शाखाओं में जाकर वर्कशॉप कर रहे हैं।

इच्छुक जन बाल वाटिकायें खोलना चाहे अथवा अपने बच्चों को इनमे भेजना चाहे तो वह संरक्षक या संरक्षिका से बात कर सकते है।

	बाल वाटिका शाखाएं	संरक्षक / संरक्षिका	संचालक /संचालिका	दीदी	भईया	साथ में संस्कार लेते पिछले जन्मों के ऋषि मुनि देवी देवता
1	रोहिणी, सेक्टर-7, नयी दिल्ली-85	निशी गर्ग 9990485395	मेघा तायल 9990757630	रिया अग्रवाल 9899777392	ओजस 9210602054	48 बच्चे
2	महावीर नगर, दिल्ली-18	कल्कि शरण गोयल 8459353830	मुक्ता गोयल 8802730830	तारिणी गोयल 8802730830	अर्पित गोयल 9873745909	11 बच्चे
3	पटपड़गंज अग्रसेन सोसायटी, दिल्ली-92	मेघना गोयल 9136377829	रमणी अग्रवाल 9212216251	मनस्वी 7289887751	अनिरूद्ध 9873523985	28 बच्चे
4	लक्ष्मी नगर, दिल्ली	राहुल अग्रवाल 9891879718	मोना अग्रवाल 9999299729	प्राची 8750063695	नमन 9811113728	15 बच्चे
5	यमुना विहार, दिल्ली-53	शालिनी पांडे 9212703815	राखी दीक्षित 8459353830	आयुषी 9711661029	सुरेन 9911109937	15 बच्चे
6	शांती कुंज, पश्चिम विहार, दिल्ली	रीता मलहोत्रा 9810239406	रीता मलहोत्रा 9810239406	शमा 7589706386	संदीप 9278656276	10 बच्चे
7	हरि मंदिर, स्टेट बैंक कॉलोनी, जी.टी करनाल रोड़ दिल्ली-9	रश्मि गुप्ता 9654488264	नमिता गुप्ता 9868555640	खुशबू 9911605387	श्रेयांश गुप्ता 8527273367	25 बच्चे
8	सनातन धर्म शिव मंदिर, ग्रीन पार्क, दिल्ली-16	इंदु बंसल 9818416191	राज गोयल 9350992278	अदिती गुप्ता 9711227544	हर्षित गोयल 9350992278	48 बच्चे
9	गली पासवान, दिल्ली-6	नीरज गोयल 9311011079	नेहा गोयल 9013313661	परी सोनी 01145683909	यश 9015224349	22 बच्चे
10	245, गगन विहार, दिल्ली-61	इंदु बंसल 9818416191	संगीता रस्तोगी 9911453848	करूणा मिश्रा 9891438131	निधान रस्तोगी 9911453848	12 बच्चे

	बाल वाटिका शाखाएं	संरक्षक / संरक्षिका	संचालक /संचालिका	दीदी	भईया	साथ में संस्कार लेते पिछले जन्मों के ऋषि मुनि देवी देवता
11	मधु विहार नई दिल्ली-92	मेघना गोयल 9136377829	आभा गुप्ता 9136079923	मुस्कान 9811433315	मयंक गोयल 9811787248	78 बच्चे
12	एस.डी. पब्लिक स्कूल, बीडनपुरा, करौलबाग, दिल्ली-55	सुषमा गोयल 9899698240	पारूल गुप्ता 9910003910	रश्मि गुप्ता 9654488264	—	40 बच्चे
13	शालीमार बाग, दिल्ली	रीता मलहोत्रा 9810239406	नीलिमा मिश्रा 7838401477	पूर्णिमा 9717299058	केश 9971661730	100 बच्चे
14	सोहनगंज, दिल्ली	सारिका मित्तल 7838529012	पूजा 9716337571	चहक मित्तल 9870537889	ओम गुप्ता 9555611096	20 बच्चे
15	सनातन धर्म स्कूल, कृष्णा नगर, दिल्ली	पारूल गुप्ता 9910003910	आशा कंवर 9810236073	—	समीर 9211207755	90 बच्चे
16	जसराम कांवेन्ट स्कूल नांगलोई, दिल्ली-41	निशी गर्ग 9990485395	मंजू गुप्ता 9953752374	—	—	50 बच्चे
17	योग माया मंदिर महरौली, दिल्ली	शालिनी पांडे 9212703815	खुशबु भार्गव 9891659381	कृतिका देवगन 9999477081	नीतिश यादव 8076854902	50 बच्चे
18	संजय ग्राम बाल वाटिका	आशा सिंघल 9891041915	तारक अग्रवाल 9719615999	—	—	25 बच्चे
19	नोएडा बाल वाटिका सी-551, 2फ्लोर, सेक्टर-19 नोएडा-201301	स्नेह लता 8178077865	तारक अग्रवाल 9719615999	जाह्नवी 9717327631	आभाष 9871426866	15 बच्चे
20	सुशांत लोक बाल वाटिका 632,ग्राऊंड फ्लोर सरस्वती विहार, गुरूग्राम	राधा अग्रवाल 9818052633	शताक्षी अग्रवाल 9711789287	भावना 8929884429	मोनू 8076369997	15 बच्चे
21	फेन्डस कॉलोनी बाल वाटिका फेन्डस कॉलोनी, सीविल लाइंस गुरूग्राम	माधुरी पांडे 9718531641	रीता अग्रवाल 9718954442	अनन्या जैन 9416922195	कौशल पांडे 9718531641	10 बच्चे

	बाल वाटिका शाखाएं	संरक्षक / संरक्षिका	संचालक /संचालिका	दीदी	भईया	साथ में संस्कार लेते पिछले जन्मों के ऋषि मुनि देवी देवता
22	संस्कार केन्द्र स्कूल, नोएडा	अमित गुप्ता 9810003910	पारूल गुप्ता 9910003910	मेघना गोयल 9136377829	—	60 बच्चे
23	सरस्वती शिशु मंदिर सेक्टर-3, राजेन्द्र नगर, साहिबाबाद, गाजियाबाद	इंदू गुप्ता 9891085091	गुन्जन अग्रवाल 9891195056	—	—	65 बच्चे
24	सैंट जेवियर स्कूल मोरटा, राजनगर	मेघना गोयल 9136377829	रमणी अग्रवाल 9212216251	—	—	40 बच्चे
25	रानी सती मंदिर काकुड़गाची कोलकाता	नेहा वरूण चौधरी 9163448228 स्नेहा केडिया 9831342993	रश्मि गनेरीवाल 9831273015	—	—	20 बच्चे
26	सत्यम अपार्टमेंट, हावडा, कोलकाता	सोनम सिंघल 9339625458	श्रुति सिंघल 8820559059	तनवी 8420587854	प्रतीक शर्मा 8777041779	18 बच्चे
27	श्री हनुमान मंदिर, बेचाराम चौधरी लेन, हावडा, कोलकाता	सोनम सिंघल 9339625458	श्रुति सिंघल 8820559059	नैना कपूर 8017596630	खुश कपूर 9051477213	40 बच्चे
28	हाइट रोड, लिलवा, हावडा, चन्दन सिनेमा के पास, कोलकाता	राजेन्द्र चौधरी 9830012386	सविता चौधरी 9874280893	दिर्वेषी 9874280893	शिवांक्ष 9874280893	11 बच्चे
29	हावडा हिन्दी हाई स्कूल हावडा, कोलकाता	सोनम सिंघल 9339625458	श्रुति सिंघल 8820559059	—	—	55 बच्चे
30	सत्यानारायण गार्डन, लिलवा, कोलकाता	अमित सर्राफ 9432187732	श्रुति सर्राफ 9830157545	दिर्वेषी 9874280893	आरूष 9830157545	12 बच्चे
31	लेनिन प्राइमरी स्कूल बागमरी, कोलकाता	वरूण चौधरी 9831089302	नेहा चौधरी 9163448228	—	—	70 बच्चे

	बाल वाटिका शाखाएं	संरक्षक / संरक्षिका	संचालक /संचालिका	दीदी	भईया	साथ में संस्कार लेते पिछले जन्मों के ऋषि मुनि देवी देवता
32	कुशवाहा हाई स्कूल घुसरी, लिलुआ, हावडा	वरूण चौधरी 9831089302	स्नेहा केडिया 9831342993	—	—	400 बच्चे
33	भारतीय हाई स्कूल लिलुआ, हावडा	महावीर चौधरी 9830334519	श्रुति सर्राफ 9830157545	—	—	40 बच्चे
34	श्री कल्कि मंदिर, महादेव तालाब, अलीपुर, कोलकाता	रश्मि गनेरीवाल 9831273015	स्नेहा गनेरीवाल 9831349596	—	—	60 बच्चे
35	राधा कृष्ण मंदिर लिलुआ कोलकाता	महावीर चौधरी 9830334519 निर्मला चौधरी 9674035089	श्रुति सर्राफ 9830157545	—	—	30 बच्चे
36	हल्लू सराय चामुंडा मंदिर, संभल	मुक्ता शर्मा 9811134378	—	—	दीपक शर्मा 8192815387	7 बच्चे
37	हल्लू सराय चामुंडा मंदिर, संभल	नेहा शर्मा 9456958505	—	मीनाक्षी 9897677354	—	27 बच्चे
38	हल्लू सराय चामुंडा मंदिर, संभल	मुक्ता शर्मा 9811134378	—	नेहा शर्मा 9456958505	—	45 बच्चे
39	कटरा, बाराबंकी	मामाजी 9312533445	सुधा कौर 9415152702	मानवी 9415362249	गौरव 9956786111	25 बच्चे
40	श्री हनुमान मंदिर बाराबंकी	मामाजी 9312533445	सुधा कौर 9415152702	—	—	15 बच्चे
41	रोहटा रोड, मेरठ	शोनित वशिष्ठ 9012410940	मोना वशिष्ठ 9761137928	रूद्रांशी वशिष्ठ 8826758855	प्रथम 8475876876	68 बच्चे
42	जयपुर	मामाजी 9312533445	आयुषी 7688882990	निधी 9414537321	—	14 बच्चे
43	श्री चंद्रेश्वर नाथ महादेव मंदिर रामघाट, अयोध्या	करूणा निधान पांडे 9936087919	सुरूची पांडे 9936087919	—	—	30 बच्चे

	बाल वाटिका शाखाएं	संरक्षक / संरक्षिका	संचालक /संचालिका	दीदी	भईया	साथ में संस्कार लेते पिछले जन्मों के ऋषि मुनि देवी देवता
44	विंध्याचल	के.सी. पांडे 9415987278	बाबा गुरू 9695426038	शिवांगी 9918265460	—	18 बच्चे
45	पंजाबी बाग, दिल्ली-26	मीनाक्षी 9811242748	नलिनी 9818647564	प्रीति गुप्ता 9910163064	तनिष्क गुप्ता 9911242748	15 बच्चे
46	शिमला	अर्पणा 9625396333	शिवानी 9810112645	—	के के वर्मा 9418275078	22 बच्चे
47	श्याम मंदिर, गल्ला मंडी, रूद्रपुर	श्रुति 9410906576	—	—	अर्श अग्रवाल 9368202626	8 बच्चे
48	वार्ड न0-6, इंदरा चौराहा, नई बस्ती, रूद्रपुर	—	रजनी पांडे 7906135442	—	—	10 बच्चे
49	हनुमान मंदिर, दिल्ली विश्वविद्यालय	सपना खन्ना 9953989891	पूर्णिमा अग्रवाल 9810135085	खुशी राठौर 9718262721	कृष राठौर 9718262721	13 बच्चे
50	असरोही, मैनपुरी जिला, उत्तर प्रदेश	मामाजी 9312533445	रमेश चंद्र मिश्रा 9756304068	भारती 9756946077	अंकित मिश्रा 9719505709	45 बच्चे
51	दतिया	मामाजी 9312533445	वल्लभ दीक्षित 9752296623	—	—	15 बच्चे
52	सिरसा, अग्रसेन कॉलोनी	सुनीता रातुसरिया 9215225823	सुनीता बंसल 8529492525	—	गौरव रातुसरिया 9467290044	15 बच्चे
53	देवी भवन, अग्रसेन कॉलोनी, हिसार	मामाजी 9312533445	रेखा बिश्नोई 8950197042	रेनू 9728399509	देव कुमार 8950197042	15 बच्चे
54	करनाल	शिखा बंसल 9896555353	पूजा 9716337571	आस्था 9466653673	अयान 9896555353	15 बच्चे
55	राम मंदिर बड़ौता गांव, करनाल	रेखा गोयल 9313690627	पूजा 9716337571	नितिका 8168952760	वंश 9050841683	50 बच्चे

	बाल वाटिका शाखाएं	संरक्षक / संरक्षिका	संचालक /संचालिका	दीदी	भईया	साथ में संस्कार लेते पिछले जन्मों के ऋषि मुनि देवी देवता
56	हैदराबाद	सरिता गर्ग 7702919883	श्रेया शर्मा 9052882243	—	—	20 बच्चे
57	राजा संतोष रोड, अभिनंदन बिल्डिंग, कोलकाता	मनोज गनेरीवाल 9830557689	रश्मि गनेरीवाल 9831273015	स्नेहा गनेरीवाल 9831343536	विठहल गनेरीवाल 9007236666	10 बच्चे
58	भारती बाल विद्यालय, शिशु निकेतन राम नगर, वाराणसी	मामाजी 9312533445	—	नीलम गुप्ता 9026919670	—	40 बच्चे
59	राम नगर, वाराणसी	मामाजी 9312533445	—	कीर्ति अग्रवाल 6393153065	—	29 बच्चे
60	राम नगर, वाराणसी	मामाजी 9312533445	—	भूमि 9026919670	—	23 बच्चे
61	राम नगर, वाराणसी	मामाजी 9312533445	—	चाँदनी 6394105743	—	25 बच्चे
62	राम नगर, वाराणसी	मामाजी 9312533445	—	गीता 9793756320	—	18 पढ़े लिखे बच्चे 19 बिना पढ़े लिखे बच्चे
63	क्लब मरीना कोटा रायपुर	नेहा चौधरी 9163448228	सुनीता केडिया 8961101000	—	—	15 बच्चे
64	चेतला नवनीर, नया पानी स्कूल, शाम बोस रोड, कोलकाता	रश्मि गनेरीवाल 9831273015	स्नेहा गनेरीवाल 9831343536	—	—	45 बच्चे
65	सॉल्ट लेक, सेक्टर-1, कोलकाता	राजेश अग्रवाल 9830026086	प्रतिभा अग्रवाल 9831193821	शिवांगी अग्रवाल 8866691613	विदित अग्रवाल 8420027260	15 बच्चे
66	बैसाखी मन्दिर ए जी ब्लॉक, साल्ट लेक, कोलकाता	वरूण चौधरी 9831089302	नेहा चौधरी 9163448228	—	—	30 बच्चे

	बाल वाटिका शाखाएं	संरक्षक / संरक्षिका	संचालक /संचालिका	दीदी	भईया	साथ में संस्कार लेते पिछले जन्मों के ऋषि मुनि देवी देवता
67	राजपुर रोड दिल्ली	पारूल गुप्ता 9910003910	अदिति गुप्ता 9711227544	—	—	10 बच्चे
68	सिटी इंटर कॉलेज बाराबंकी	सुधा कौर 9415152702		—	—	50 बच्चे
69	राम घाट, अयोध्या	रामुज चतुर्वेदी 9453185055	पूजा चतुर्वेदी 9453185055	—	निर्भय उपाध्याय 9415296022	10 बच्चे
70	लक्ष्मी विद्यालय,कोलकाता	नेहा चौधरी 9163448228	वरूण चौधरी 9831089302	—	—	50 बच्चे
71	एडमायर पब्लिक स्कूल कोलकाता	मंयक चौधरी 9748496244	—	—	—	60 बच्चे
72	श्री राम मंदिर रोहिणी सैक्टर-8	मेघा तायल 9990757630	निशी गर्ग 9990485395	—	—	40 बच्चे
73	घंटाघर दिल्ली	पूजा अग्रवाल 8585993504	संजू गडोदिया 8800475036	—	—	10 बच्चे
74	सी-38 ग्रेटर कैलाश कॉलोनी लाल कोठी, जयपुर	अम्बिका 9571171666	—	—	—	10 बच्चे
75	डा. हनुमान मंदिर संस्कृत महाविद्यालय,दतिया	—	—	—	—	30 बच्चे
76	मंदिर जयपुर	अम्बिका 9571171666	—	—	—	20 बच्चे
77	बी-14, आनंद विहार, इटली मंदिर के सामने	मालती अग्रवाल 9958577055	गुंजन अग्रवाल 9910005249	—	—	5 बच्चे
78	शीतला माता मंदिर रायपुर	नेहा वरूण चौधरी 9163448228	सुनीता केडिया 8961101000	—	—	25 बच्चे

सुबह शाम बड़े तो बड़े बच्चों द्वारा की गई

श्री कल्कि जी की मुक्तिदायिनी आरती

मनुष्य की पत्री तो क्या हाथों की रेखाएं तक बदल देती है

—9818355455

ऊँ जय जय सुर रक्षक, असुर विनाशक, पदमावति के प्यारे।
जय जय श्री कल्कि भक्त हितकारी, दुष्टन मारन हारे॥
जय जय खड्गधारी, जय असुरारी, गौ विप्रन के रखवारे।
क्षीरसागर वासी, जय अविनाशी, भूमि भार उतारन हारे॥
अलख निरंजन भव भय भंजन, जय संभल सरकारे।
भक्तजनों के पालनकर्ता, जय गऊन रखवारे॥
जय जयकार, करत सब भक्तजन, सुनिए प्राण पियारे।
वैगहि सुधि लेना मोरे स्वामी, 'हम सब' दास पुकारें॥
जय कल्कि भगवान
बार बरोबर बाड़ है, तापर चलत ब्यार।
श्री कल्कि पार उतारिए, अपनी ओर निहार॥

ध्यान योग्य : कल्कि जी की मुक्तिदायिनी आरती हमारी पूजा में किसी भी प्रकार की कमी की पूर्ति करती है।

अधिक जानकारी के लिए : श्री कल्कि बाल वाटिका फांऊडेशन

9136377829, 9873349478, 9818416191, 9810057055, 9891195056

फल समर्पण

हे कल्कि भगवान हमने जो भी अच्छे काम किये हैं उसका फल आपके अर्पण है। हे कल्कि भगवान मुझे व मेरे परिवार को ऐसी शक्ति दीजिए जिससे हम सुखी भाव से स्वस्थ शरीर से वैभवता पूर्वक (धन, सम्पदा, ऐश्वर्य, भक्ति और ज्ञान) राजा रानियों की तरह आपके प्राकट्य के प्रचार का सम्पूर्ण कार्य करें। गऊ, विप्र, धर्म, सज्जन लोगों की रक्षा कीजिए। हमें रास्ता दीजिए। जो बच्चे आपका कार्य कर रहे हैं, जो करेंगे, जो गर्भ में हैं और जो आएंगे उनकी रक्षा कीजिए। मुझे और मेरे माता-पिता को आयु शक्ति और स्वास्थ्य प्रदान कीजिए। हमें निर्भय होकर जीते जी आपका काम करना है।

संचालिकाओं (बच्चों में संस्कार रोपण की द्वारा 30 दिसंबर 2018
विवेकानंद ऑडोटोरियम की गई 208 बच्चों द्वारा प्रस्तुति
आज चार चैनलों पर आनी शुरू हुई

भगवान श्री कल्कि ने दिया
चार चैनलों पर अपना प्रचार प्रसारण

1 संस्कार THE CHANNEL OF INDIA हजारों संस्कृति हजारों विरासत

2 SADHNA PLUS NEWS

3 शुभ TV

4 साधना

किस दिन, किस चैनल पर किस समय कल्कि जी का प्रसारण आएगा जानने के लिए संपर्क करें -
9873349478, 9136377829, 9711789287

कल्कि समाज के लिए विशेष उपयोगी

जैसी अवस्था वैसी व्यवस्था
भगवान श्री कल्कि के द्वारा प्रदान
सुरक्षा कवच

भगवान निराकार से साकार ऐसे बनता है

आज से लाखों वर्ष पूर्व महर्षि वाल्मिकी ने संस्कृत में रामायण लिखी थी। आज से लगभग 300 वर्ष पूर्व कांशी में तुलसीदास जी ने रामचरित मानस की रचना की थी। जरा देखें उन्होंने निराकार भगवान को दोहे/चौपाई/सारांश/प्रसंगों से कैसे अतुलनीय साकार रूप में समझाया है।

जैसे- *जब रामायण में पार्वती माँ ने शंकर जी से पूछा 'भगवान किसे कहते हैं?' तो महादेव शिव ने बताया...*

बिनु पद चलइ सुनइ बिनु काना, कर बिनु करम करइ बिधि नाना।
आनन रहित सकल रस भोगी, बिनु बानी बकता बड़ जोगी॥
तन बिनु परस नयन बिनु देखा, ग्रहइ घ्रान बिनु बास असेषा।
असि सब भांति अलौकिक करनी, महिमा जासु जाइ नहिं बरनी॥

रामायण बाल कांड चौपाई 120

अर्थात: भगवान उसे कहते हैं जो बिना पैरों के चलता है, बिना कानों के सुनता है और बिना हाथों के नाना प्रकार के काम करता है। बिना पेट के मुँह (जिव्हा) के सारे रसों का आनंद लेता है और बिना बाणी के बहुत योग्य वक्ता (बोलने वाला) है, वह बिना शरीर के स्पर्श करता है, बिना आँखों के देखता है और बिना नाक के सब गंधों को ग्रहण करता है। उस भगवान की शक्ति सभी प्रकार से ऐसी अलौकिक (विचित्र) है कि जिसकी महिमा का वर्णन नहीं किया जा सकता है।

भावार्थ: भगवान सदैव हमारे साथ हैं, हमें समझना और एहसास करना चाहिए।

कल्कि समाज कौन ?

भगवान श्री राम को प्रात: राजतिलक होने जा रहा था कि उससे पहले कैकई ने राजा दशरथ के द्वारा चौदह वर्ष का वनवास जाने का उन्हें संदेश सुनाया। यह सुनकर अयोध्या वासी विचलित (दुखी) अवश्य हुए लेकिन अंततोगत्वा कोई उनके साथ वन में नहीं गया।

वन में सीता हरण (रावण द्वारा साधु भेष में सीता को उठा ले जाना) पर भी श्रीराम ने अयोध्या में कोई संदेश भेजकर मदद नहीं मांगी अपितु श्री हनुमान/सुग्रीव द्वारा रीछ/वानरों की मदद से रावण पर विजय प्राप्त की। युद्ध के मैदान में उन्होंने श्री हनुमान को जल से भरा एक अभिमंत्रित पात्र दिया कि इसे मरे हुए रीछ, वानरों, राक्षसों पर छिड़क दो। ऐसा करने पर रीछ, वानर जिंदा हो गए और राक्षस मरे रह गए। वहीं रीछ, वानर द्वापर (कृष्णावतार) में गोप-गोपी बने और अब कलियुग (जो समय अब चल रहा है) में कल्कि समाज से जाने जाते हैं और कल्कि जी के प्राकट्य के कार्यों से जुड़े हुए हैं।

कल्कि समाज को निराकार भगवान साकार बना कर ऐसे संभाल रहे हैं

कलियुग जो समय अब चल रहा है इसकी भीषणता (विकरालता) को देखते हुए इस युग में भगवान नारायण श्री कल्कि चार प्रकार से भक्तों को पग-पग

पर संभाल रहे हैं—

1. स्वप्नानुभव 2. वाणी अनुभव 3. जागृत अनुभव 4. मानसिक अनुभव

आगे चल कर हम विस्तार से इसका विवरण प्रस्तुत कर रहे हैं।

<u>भगवान श्री राम-कृष्णा-कल्कि कब कब आते हैं</u>

जैसा श्री मदभगवत गीता में बताया है—

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत। अ भ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजा यहम्॥
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्। धर्म संस्थापनार्थाय स भवामि युगे युगे॥

गीता अध्याय 4 श्लोक 7-8

अर्थात: जब जब पृथ्वी पर अधर्म बढ़ता हैं और धर्म(प्रकृति) का नाश होता है, भगवान महाविष्णु उस समय की आवश्यकता अनुसार धर्म की स्थापना करने के लिए पृथ्वी पर अवतार लेते है। भगवान महा विष्णु ने त्रेता युग में 12 कलाओं(शक्तियों)के साथ, श्रीराम रूप में अवतार लिया और द्वापर युग में 16 कलाओं (शक्तियों)के साथ , श्रीकृष्ण रूप में अवतार लिया। भगवान महाविष्णु ने अब कलियुग में श्री कल्कि रूप में पूरे 64 कलाओं (शक्तियों)सहित अवतार लिया है जिनका प्रगट होना शेष है।

किसी भी भगवान, खास तौर से कलियुग में महाविष्णु के अवतारी , श्री कल्कि भगवान, की कृपा पाने का सबसे सरल तरीका हैं मंत्र-संकल्प-उपचार। हिन्दू धर्म के अनुसार मंत्र, संकल्प और उपचार (दान) में बड़ी शक्ति होती है।

<u>जैसी अवस्था वैसी व्यवस्था के अनुरूप प्राचीन समय में और अब कलियुग (जो समय अब चल रहा है) में मंत्र-संकल्प-उपचार का प्रस्तुत है सुरक्षा कवच</u>

सदियों से हमारे बुजुर्ग जिस देवी देवता को पूजते थे, बोल कबोल में उनसे ही मकान, दुकान, वाहन, बच्चों की शादी, संतान, आभूषण आदि मांगते रहे हैं। साथ ही अपने या पराये के षड्यंत्र, नज़र, टोक (हाय), उसके पास संतान-व्यापार-वैभवता आदि हैं और मेरे पास नहीं है। बीमारियों से छुटकारा, लड़ाई-झगडे-मुकदमों में राहत आदि परेशानियों में फसने पर विभिन्न प्रकार के उपचार-दान-उतारा शास्त्रों-विद्वानों-पुरोहित और देश-काल-समाज के अनुकूल करते आ रहे हैं। हमेशा से यह सारे दान-उपचार-उतारा कल्याणकारी व फलदायी रहे हैं।

सदियों से जो संकल्प-उपचार-दान-उतारा चले आ रहे हैं वह हैं तो बहुत। लिखें तो किताबें बन जायें। लेकिन हम उदाहरण स्वरूप यहाँ कुछ लिख रहे हैं। 1) गणेश जी की सवामनि 2) हनुमान जी की सवामनि 3) महा लक्ष्मी-विष्णु-बांके बिहारी जी का 56 भोग (इनमे से किसी भी रूप में लगभग 15000रू खर्चा आयेगा) 4) दुर्गा माँ का जागरण/सत् चंडी पाठ (इसमें लगभग 35000 से 1 लाख तक का खर्चा बैठता हैं) 5)शंकर जी को चांदी का त्रिशूल, नाग-नागिनी का जोड़ा, दूध में काला तिल मिलाकर आदि चढ़ाना (क्रूर ग्रह के निवारण के लिए) 6) काली माँ को बकरा (मांसाहारी हो तो) या काट कर तरबूज (शाकाहारी हो तो) 7) लाल मिर्च या फिटकरी,6बार सीधा और 7वे बार उल्टा घुमाकर अंगीठी में डालना (कमाल हैं फिटकरी में तो जिसकी नज़र-टोक होती थी, अंगीठी में उसका मुखौटा सा बन जाता था) 8) बिमार बच्चे पर जब डॉक्टर दवाई असर नहीं कर रही हो, तो घर का कोई बड़ा पान के बीड़े में एक लौंग रख, एक गुलाब के फूल, लडडू और सिक्के के साथ बच्चे पर 6 बार सीधा और 7 वे बार उल्टा घुमाकर बिना बोले चौराहे पर रख आता था। बच्चे को काला टीका लगाना जिससे

**मंत्र-संकल्प-उपचार कृपया पृष्ठ 7 पर देखें*

बुरी अला-बला चली जाती थी। 9) मक्कार (मुँह में राम बगल में छूरी) जैसे जब राजा,धनी-धार्मिक लोगों को परेशानियों में फंसाकर सताते थे, तो बगुलामुखी माँ की पूजा-जाप विद्वान जन पीले वस्त्र पहनकर रात में करते थे। 10) भैरों जी को रोट-शराब चढ़ाना 11) गंगा माँ से संतान मांगना, और संतान होने पर उसे गंगा माँ की गोद में देना (एक सदस्य गंगाजी में बैठ जाता था और माता/पिता बच्चे को उसकी गोद में दे देते हैं) 12) अनेक प्रकार की आवश्यकताओं के लिए अलग-अलग मंत्रों से यज्ञ किये जाते हैं। जैसे त्रेता में राजा दशरथ ने पुत्रयेष्टि यज्ञ करके राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न को पाया। द्वापर में राजा द्रुपद ने यज्ञ करके द्रौपदी को पाया। राजा राजसूय यज्ञ करते थे। विद्वान् जन वर्षा के लिए, इंद्र की प्रसन्नता के लिए यज्ञ करते थे आदि आदि।

कलियुग (अभी जो समय चल रहा हैं) में कल्कि समाज ही नहीं अनेक सनातन धर्मियों में शक्ति और रूपए के साधन सीमित हैं। भगवान श्री कल्कि ने उपर्युक्त परेशानियों से समय समय पर निकलने के सुरक्षात्मक और सरल उपाय जो कल्कि समाज को दिए हैं वह हम यहाँ दे रहे हैं। अगर इनसे किसी को भी कोई फायदा मिले तो इसे हम अपना सौभाग्य समझेंगे।

कलियुग में युगावतार भगवान श्री कल्कि एक प्रमुख शक्ति**

कल्कि सब देवन के देवा, सभी देवता करते सेवा।
जो कल्कि का नाम उचारे, उसको मिलते सभी सहारे॥

श्री कल्कि भगवान चार प्रकार के (स्वपन, जागृत, वाणी, मानसिक) अनुभवों- आभास (Intutions) द्वारा भक्तों का मार्ग-दर्शन करते हैं। यह कल्कि समाज/ सनातन धर्मियों को परेशानियों से बचाकर वैभवता देते हैं और भूमि का भार उतारने में सहायक होते है।

"कल्कि नाम अनुभव का द्वारा, भूमि-भार उतारन हारा है"

कल्कि महामंत्र एवं प्रयोग

कल्कि महामंत्र '**जय कल्कि जय जगत्पते, पदमापति जय रमापते**' इसमें दो बार भगवान महाविष्णु और दो बार महालक्ष्मी जी का नाम आता है। भगवान महा विष्णु पालक होने के कारण घर व्यापार में व्यवस्था प्रदान करते हैं और महालक्ष्मी जी धन-वैभवता प्रदान करती हैं।

कल्कि मंत्र 'जय कल्कि जय जगत्पते, पदमापति जय रमापते' का जाप जीवन की किन परिस्थितियों में विशेष फलदायी है

अनुभव द्वारा जीवन में मार्गदर्शन पाने के लिए
-पूर्व जन्मों के कर्मों का कर्ज उतारने के लिए
-अपने जीवन में मंगल और तेज बढ़ाने के लिए
-सभी देवी देवता की कृपा पाने के लिए

कल्कि महामंत्र के जाप के पश्चात् प्रार्थना

मुझे और मेरे परिवार को स्वास्थय प्रदान करें जिससे हम सुखी भाव से वैभवता(धन-स पदा-ऐश्वर्य-भक्ति-ज्ञान) पूर्वक राजा- रानियों की तरह आपके प्राकट्य का स पूर्ण कार्य करूँ। जो बच्चे आपका काम कर रहे हैं, जो बच्चे करेंगे,जो बच्चे गर्भ में हैं उनकी रक्षा कीजिए। गऊ, विप्र, धर्म व सज्जन लोगों की रक्षा कीजिए। हमें रास्ता दीजिए।

**कल्कि वर्णन कृप्या पृष्ठ 8 पर देखें

भगवान श्री कल्कि द्वारा अनुभवों (स्वप्न,जागृत,वाणी व मानसिक) (आभास/Intutions) के माध्यम से अपने कल्कि समाज को प्रदान विशेष 33 कोटि (प्रकार है न कि करोड़) में से बारह देवी-देवताओं का सुरक्षा कवच

श्री गणेश जी—समस्त प्रकार की खुशियाँ घर-व्यापार-जमीन-जायदाद दिलवाने वाले और मंगल करने वाले हैं। गणेश जी विघ्न हर्ता, ऋण मोचन (कई जन्मों का लेन-देन का भुगतान पूरा करवाने वाले) ग्रह दोष निवारक हैं।

विघ्न हर्ता-बनते हुए काम बिगड़ रहे हों, हर कदम पर रुकावटें आ रही हो तो एक रुपए दो बताशे/ 5 रुपए 1 खोए की बर्फी/एक रुपया एक बेसन अथवा नुक्ती का लड्डू का संकल्प कर गणेश जी से संबंधित परेशानी बोलकर उसका निवारण करने की प्रार्थना करें। साथ में यह अवश्य कहें कि मुझे कल्कि जी का कार्य करना है/कर रहा हूँ मुझे रास्ता दें।

ऋण मोचन- धन का तेजी से नुकसान होने पर, उधार में गया पैसा वापिस न मिलने पर, जमीन जायदाद पर बड़ा संकट आने पर, किसी ऐसे बड़े क्लेश में फंसने पर जिससे निकलने का रास्ता न दिख रहा हो (पुलिस, कोर्ट, कचहरी, मुकदमा, कुर्की) गणेश जी का 257 रुपए का संकल्प करें इसमें से 180 रुपए की सफेद बर्फी और 77 रुपए दक्षिणा गणेश जी को अर्पण कर संबंधित परेशानी से निकलने की प्रार्थना करके कहें मुझे कल्कि जी का काम करना है/कर रहा हूँ।

ग्रह दोष निवारक-क्रूर ग्रहों के चक्रव्यूह में फंसने पर, जन्मपत्री में ग्रह दोष होने पर 20 रुपए के संकल्प में से सफेद बर्फी एवं दक्षिणा दे दें। ग्रह दोष निवारण की प्रार्थना करें।

श्री हनुमान जी—हनुमान जी कल्कि समाज के आदि गुरु हैं अत: हमारा भी मार्गदर्शन करते हैं। कई बार कलियुगी शक्तियाँ कल्कि भक्तों के मस्तिष्क में बैठकर इस तरह से उन्हें भ्रमित कर देती हैं कि वह सांप सीढ़ी के खेल की तरह कल्कि जी की आराधना पूजा/प्रचार कार्य करके अपने पुण्यों का संचय करते हैं लेकिन उनसे ऐसी गल्तियाँ करवाती हैं कि उनके पुण्य फलीभूत नहीं हो पाते। ऐसी परिस्थिति में गुरु रूप में हनुमान जी का आवाहन करने से सच्चा रास्ता मिलता है। कलियुगी शक्तियों के चक्रव्यूह में फंसकर कई बार कल्कि भक्त विषाद, (Depression), भय और असाध्य रोगों के चंगुल में फंस जाते हैं। इसमें भी हनुमान जी के निमित्त किए गए उपचार बहुत फलदायी होते हैं। प्रेत शक्तियों से जुड़े अनुभव या अनुभूति होने पर एवं षडयंत्रकारी शैतानी शक्तियाँ यदि बुरी तरह से जकड़कर तबाह करने का प्रयास करें तो ऐसी अवस्था में स्वप्नानुभवों के माध्यम से हनुमान जी की कृपा प्राप्त करके संबंधित समस्या से निकलने के लिए हनुमान जी ने कई रास्ते प्रदान किए हैं।

उपचार—एक रुपया दो बताशे-20 रुपए में से लड्डू और दक्षिणा, हनुमान जी का चोला चढ़ाना, हनुमान जी की 11 शनिवार की पूजा का संकल्प करना, 129 रुपए हनुमान जी के योगी-योगिनियों का भाग (80 रुपए के बेसन/बूंदी के लड्डू एवं 10 रुपए दक्षिणा, 39 रुपए के सिक्के एवं लड्डू गरीबों में बांटें)

जब घर/अस्पताल में बीमारी काबू में न आ रही-अस्पताल में डॉक्टर घुमा रहे हो-जबरदस्ती बेवजह बातें कलह में राक्षसी शक्तियाँ फंसा रही हों तो 20 रुपए का हनुमान जी की योगी-योगिनियों का संकल्प करके 10 रुपए का प्रसाद (नुक्ती-बेसन का लड्डू) एक रुपए दक्षिणा के साथ प्रसाद चढ़ाकर प्रसाद एवं बाकी 9 रुपए मंदिर के बाहर भिखारी जो भी मिलें उन्हें प्रसाद के रुपयों में साथ बांट दें।

विशेष : जब अनुभव में ज्यादा रुपए मांगें जाएं तो उसको 5 प्रतिशत से भाग करके कम से कम 129 रुपए हनुमान जी के योगी-योगिनियों का भाग (80 रुपए के बेसन के लड्डू एवं 10 रुपए दक्षिणा, 39 रुपए के सिक्के एवं लड्डू गरीबों में बांटें) हनुमान जी की विशेष कृपा पाने के लिए-प्रतिदिन हनुमान जी की आरती, कल्कि चालीसा का पाठ, भजन की किताब से गुरु बाल मुकुंद गदाधारी जय हो तु हारी जय हो का पाठ विशेष फलदायी है।

जब एक और अनेक षडयंत्रकारी शक्तियाँ बनते कामों में रूकावटें डाल रही हैं— श्री हनुमान जी की पूजा : तांत्रिक शक्तियों से घिरने पर जब रास्ते बंद नजर आ रहे हैं-हनुमान जी के सामने मंदिर में, मजबूरी में घर पर (बन पड़े तो शाम के समय) पूजा करके (दीपक, लाल वस्त्र, सिक्के मंदिर में अथवा पेड़ के नीचे भिजवा दें।

सामग्री : लाल कपड़ा (12 मिट्टी के दीपक रखने को जिसमें 1 से हनुमान जी की आरती की जाएगी) बत्ती, सरसों का तेल, उड़द की दाल के पांच-पांच दाने, एक माला हक् अनीह निष्कलंक गौरण्डा दुष्टहा नाशनं पापहा जाप वास्ते, हरे रंग का आसन बैठने के लिए, । 1-1 के 11 सिक्के 11 दीपकों के साथ, बारहवें दीपक से श्री हनुमान जी की आरती करके कहें कि मैं कल्कि जी की/का हूँ मुझे रास्ता दें।

सरस्वती माँ—ज्ञान और विद्या की देवी हैं। इनका संकल्प निम्न परिस्थितियों में किए जाते हैं। सुनने समझने की शक्ति तीव्र करने के लिए, बोली में मिठास व संतुलन (कम व अच्छा बोलना) लाने के लिए। विद्यार्थियों के लिए परीक्षा में सफल होने के लिए। सद्बुद्धि और विवेक जाग्रत करने के लिए। बार बार हो रही एक ही गल्ती को सुधारने के लिए। किसी भी तरह की कान नाक गले (इ.एन.टी.) या थायराइड संबंधी बीमारी पर नियंत्रण पाने के लिए। ब्रह्मांड में फैली सकारात्मक ऊर्जा को ग्रहण करने के लिए। क्रोध नियंत्रण के लिए **सरस्वती जी का यह मंत्र : ऊँ एं ऊँ नमः की एक माला करके कहें मुझे कल्कि जी का काम करना है मुझे रास्ता दें।**

उपचार : एक रुपए दो बताशे अथवा 20 रुपए का संकल्प करके 10 रुपए का प्रसाद और 10 रुपए दक्षिणा चढ़ा दें।

शंकर भगवान—पितृ दोष से पीड़ित होने पर, स्वप्नानुभव में शेर का दिखना, आग का लगना अथवा दिखना एक अभिषेक करें।स्वयं/दूसरे को/पितृों को वस्त्रहीन देखने पर एक अभिषेक के साथ नांदी श्राद्ध करें। यह नीचे विस्तार से बताया गया है।

उपचार—पंचामृत एवं 1 सिक्के की दक्षिणा के माध्यम से भगवान शंकर का रुद्राभिषेक साधारण विधि से स्वयं कर दें।

गाय के कच्चे दूध में काले तिल मिला कर, शनिवार को गाय के कच्चे दूध में काले तिल मिलाकर, कल्कि हवन महामंत्र "ऊँ नमः श्री कल्कि भगवते लेच्छ दल हन्ते फट् स्वाहा" की एक माला का शिवलिंग पर किया अभिषेक* **शनि, राहू और केतू ग्रह के दोष को शांत करता है।** यह तब तक करते रहना चाहिए जब तक कोई सही अनुभव न आ जाए।

3) यदि पितृ शक्तियाँ बार-बार दिखाई पड़े या कोई भुगतान माँगती हुई दिखाई पड़े तो नांदीमुख श्राद्ध एक अभिषेक की सामग्री के साथ 1 जोड़ी वस्त्र 1 सीधा पिंडी को स्पर्श करके वहीं रख दें। यह उपचार कल्कि भक्त और उसके परिवार को उनके ऋण से मुक्त कर देता है।

4) अनुभव में यदि अतृप्त पितृ अपनी या औरों की शक्तियां एक से अधिक बार दिखाई देतीं हैं तो पितृ लोक की स्वामिनी देवी स्वधा और भोलेनाथ के नाम से एक सीधा, पानी की बोतल और 5 रुपये का संकल्प उन पितृ शक्तियों को तृप्त और संतुष्ट करने के लिये कल्कि भक्त और उसके परिवार की रक्षा करता है।

5) सोमवार को गाय के कच्चे दूध में काला तिल मिलाकर कल्कि हवन महामंत्र की एक माला का शिवलिंग पर एक अभिषेक **मार्केश योग से कल्कि भक्त के प्राणों की रक्षा करता है।** इसके साथ ही सोमवार को महामृत्युंजय मंत्र की तीन माला का हवन किया जाता है। कुछ ही ह तों में मार्केश की दशा कट जाती है और अनुभव में कल्कि जी इसका संकेत भी देते हैं।

** हर मंत्र के बाद एक च मच पंचामृत पिंडी पर चढ़ा दें।*

6) यदि जीवन में बहुत ज्यादा परेशानी आ जाए तो तीन केलों के साथ पंचामृत का अभिषेक शीघ्र ही उन परेशानियों से बाहर निकलने का रास्ता देता है।

7) यदि कुण्डली में बुद्ध ग्रह खराब है और उसके कारण परेशानियाँ आ रही हैं, पति-पत्नि में बे वजह कलह है तो 11 भिंडी (ऊपर से टोपी काटकर चढ़ायें)

के साथ किया हुआ अभिषेक इस ग्रह के दोष को धीरे-धीरे शांत कर देता है।

शंकर जी—जब राक्षसी शक्तियाँ अपने या औरों के दिमाग पर बैठकर हमारे काम को पूरा रोक दें तब 10 संतरे अथवा 10 अखरोट, 10 सिक्कों के साथ मंदिर में शंकर जी को अपनी परेशानी बताते हुए चढ़ाएं कि मैं कल्कि जी *की/का* हूँ मुझे रास्ता दें।

महालक्ष्मी जी—सुख समृद्धि वैभवता (धन-संपदा-ऐश्वर्य-ज्ञान-भक्ति) प्राप्त करने के लिए, स्वप्नानुभव में दरिद्रता दिखने पर धन प्राप्ति दिखने पर

उपचार—एक रुपया दो बताशे, अथवा 20 रुपए 10 रुपए प्रसाद एवं 10 रुपए दक्षिणा

विकट परेशानियों में महालक्ष्मी का 120 रुपए का संकल्प करें (100 रुपए का प्रसाद एवं 20 रुपए दक्षिणा)

दुर्गा जी—भारतीय सरकार की दंडनीय शक्तियों (इंकम टैक्स, सेल्स टैक्स, पुलिस, कस्टम, सी बी आई, विजिलेंस, कारपोरेशन, एम सी डी) के चंगुल में फंसने के डर अथवा फंसने पर,

उपचार—तीन सिक्कों के साथ 26 पूरी हलवे (10+10+6 पूरी उस पर हलवा रखने) का संकल्प लिया जाता है। 26 पूरी हलवा घर में बनाने में असमर्थ हों तो बाहर हलवाई से बनवा कर भी दे सकते हैं। पैसा कल्कि जी के शुभ के डिब्बे से ले लें। उसमें रुपया कम होने पर उसे उधार दे सकते हैं उसमें आने पर ले लेवें। घर में यदि बनाते हैं तो भी अंदाजन शुभ के डिब्बे से रुपया निकाल कर अपने पर्स में रख लें। जब पैसों की कमी / शुभ के डिब्बे में रुपया काफी कम होने पर 26 बताशों एवं तीन सिक्कों के साथ यह संकल्प पूरा करें। इसमें समय ज्यादा लगता है।

जब बुरी शक्तियाँ अनुभव में परेशान करें या घर में अस्त व्यस्तता हो और मन में गिरावट हो

माँ दुर्गा का एक रुपए दो बताशे/20 रुपए के प्रसाद का संकल्प लिया जाता है। 10 रुपए प्रसाद एवं 10 रुपए दक्षिणा

साध्य/असाध्य रोगों के चंगुल में फंसने पर, वैवाहिक जीवन में कलह उत्पन्न होने पर, स्वप्नानुभव में विवाह टूटने के अनुभव आने पर, घर में काम करने वाले स्टाफ की परेशानी आने पर, घर में काम करने वाले की उद्दण्डता देखने पर—20/50/100 रुपए हाथ लगाकर दुर्गा जी की योगिनियों का संकल्प किया जाता है। कचौरी सब्जी एवं दक्षिणा के माध्यम से गरीबों में सिक्कों के साथ बांट दें और अपनी परेशानी से निकलने की प्रार्थना करें। जब डॉक्टर को कोई बीमारी समझ में न आए तो 20 रुपए का संकल्प लें कि हे माँ मैं आपको 14 परांठे चढ़ाऊंगा/गी मुझे स्वास्थ्य जीवनदान दो।

काली जी—जब अनुभव में राक्षसी शक्तियाँ नोचती-खसोटती बार-बार दिखें तो एक तरबूज को काट कर 5 रुपए का सिक्का मंदिर में काली जी को अपनी परेशानियों के साथ चढ़ा कर कहें मैं कल्कि जी *की/का* हूँ मुझे रास्ता दें।

जब जादू-टोना, तांत्रिक शक्तियों के प्रहार से बीमारी, दुर्घटना बार-बार सताए— एक गोले/गट में ऊपर से काट कर 11 लौंग के जोड़े, दो सुपारी, एक जायफल, पांच मेवा के टुकड़े, कपूर की डली गोले में डाल कर कलावा बांधकर एक सिक्के के साथ अपने और परिवार के हाथ लगाकर काली जी के किसी भी मंदिर में हवन कुंड में अपनी परेशानी बताते हुए चढ़ा दें और कहें कि हे माँ जो शक्तियाँ मुझे परेशान कर रही हैं उन्हें उनकी जगह भेजें मैं कल्कि जी *की/का* हूँ मुझे रास्ता दें।

स्वप्नानुभव में तबाही बर्बादी दिखने पर, दुर्घटना दिखाई देने, जीवन में दुर्गम परिस्थितियाँ चल रही होने पर, यात्रा पर निकलने से पूर्व काली माँ का 20 रुपए का संकल्प करें (खोए की बर्फी/कलाकंद एवं दक्षिणा अर्पण करें)

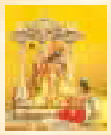

बगुलामुखी माँ—बार-बार बीमार पड़ने पर अथवा जब रोग में घिर गए हैं तो। 5 परांठे थोड़ी हल्दी डाल कर बनाएं और 20 रुपए के साथ मंदिर में बगुलामुखी माँ अथवा कल्कि जी/विष्णु जी को (कहें बगुलामुखी तक पहुंचा दें) चढ़ा दें और कहें मैं कल्कि जी *की/का* हूँ मुझे रास्ता दें, स्वास्थ्य दें।

जब अपने अथवा बाहर के आप, आपके परिवार पर षडयंत्र करें तो दस रुपए का पीला प्रसाद, दस रुपए दक्षिणा के साथ मंदिर में अपनी परेशानी बताकर माँ बगुला को चढ़ाएं और उनसे कमांडो मांगे और कहें मैं कल्कि जी *की/का* हूँ मुझे रास्ता दें।

प्रचंड शत्रुओं से घिरे होने पर—60 रुपए हाथ लगाकर संकल्प करें जिसमें पाँच हल्दी के परांठों के साथ 20 रुपए, दही आलू का साग 20 रुपए, दो खरबूजे अथवा सरघे 20 रुपए के साथ चढ़ाएं उनसे कमांडो मांगे और कहें मुझे परेशानियों से निकालें मुझे कल्कि जी का काम करना है।

गंगा जी—जब स्वप्न अथवा प्रत्यक्ष में सिर के बाल झड़ें, अथवा स्वप्न में दांत टूटें तो चार जोड़ी रबड़ की नई चप्पल चार सिक्कों के साथ गंगा जी में प्रवाहित करें अथवा गंगा मंदिर में पूछकर चरणों से छुआ कर दरवाजे पर रख दें और कहें मैं कल्कि जी *की/का* हूँ मुझे रास्ता दें।

जब राक्षसी/तांत्रिक शक्तियाँ अपनों या परायों में बैठकर आपको, आपके परिवार को व्यापार को बेहद परेशान कर रही हों तो दो खरबूजे/शरीफा/दो सेब में चाकू से दो कट लगाकर दो सिक्कों के साथ अपनी परेशानी कहते हुए गंगा जी अथवा मंदिर में चढ़ाएं कि हे माँ मुझे सताने वाली शक्तियों की नसें काटिए उनको उनकी जगह भेजें मैं कल्कि जी *की/का* हूँ मुझे रास्ता दें।

यदि पितरों के असंतुष्ट अतृप्त होने का अनुभव बार बार आए तो शहद मिली हुई खीर दक्षिणा के साथ गंगा जी को अर्पण करें और कहें कि अतृप्त पितरों को इससे तृप्त करें। मैं कल्कि जी *की/का* हूँ मुझे रास्ता दें।

सूर्य भगवान—यह प्रत्यक्ष नारायण है। प्रतिदिन इन्हें तांबे के लोटे में चीनी/चावल डालकर बाहर रोली का टीका लगाकर जल अर्पण करें (जल के छींटे पैरों पर न पड़ें क्योंकि सिर के ऊँचे से चढ़ाया जल किरणों के बीच से निकलते हुए रासायनिक हो जाता है यहाँ तक कि पौधे में भी इसे डाला जाए तो कालांतर में वह मुरझा जाता है सूर्य को प्रतिदिन प्रातः 10 बजे से पहले जल चढ़ाने से आँखों की रोशनी तेज होती है और कभी हृदय रोग नहीं सताता। अपनी सारी परेशानियाँ उनसे कह दें और रास्ता मांगे। यह सच्चे पिता की तरह बहुत जल्दी आपको समस्याओं का समाधान देंगे।

गाय माता—गाय धन की देवी है। प्रतिदिन गाय माता की चार/एक रोटी गुड़/चीनी रखकर गाय माता को अपनी परेशानियाँ कहने से बहुत जल्दी रास्ता मिलता है। विकट परेशानियाँ होने पर आटे में मेथी मिलाकर मीठे के साथ गाय माता को अर्पण करने से धनवृद्धि होती है।

भैंरो जी—भैंरो जी भगवान शिव की ऐसी शक्ति हैं जो दैवीय और आसुरी दोनों शक्तियों पर समान रूप से शासन करती हैं। आसुरी शक्तियों के

किसी भी प्रहार से अपनी रक्षा करने के लिए कोई भी कल्कि भक्त अपने स्वप्नानुभव के अनुसार भगवान कल्कि का नाम जोड़कर केवल 1 रुपए दो बताशे/20 रुपए एक मीठा रोट/ विकट परेशानियों में 80 रुपए (70 रुपए की शराब एवं 10 रुपए दक्षिणा) जैसे ही संकल्प करता है भैंरों बाबा की दिव्य शक्तियाँ उसी समय जाग्रत होकर आसुरी शक्तियों से कल्कि भक्त की रक्षा करती हैं और दैवीय शक्तियों का सुरक्षा कवच प्रदान करवाती हैं। 20 रुपए से सात दिन प्रार्थना करके बुधवार को 4 रोट चढ़ावें और भैंरों बाबा से कहें कि मुझे परेशानियों से निकालें।

योगमाया माँ—भगवान विष्णु की शक्ति माँ योगमाया हैं जो उनके मनोनुकूल कार्य करती हैं। इस जगत की समस्त दैवीय और आसुरी शक्तियाँ इनके स मोहन के आधीन हैं। इनकी इच्छा से गतिशील हैं।

कल्कि जी के प्रोजेक्टों पर कार्य शुरूकरते ही उसकी प्रभुता देखकर प्रोजेक्ट करने वालों के खाते में कल्कि जी उनके खाते में वैभवता जमा

कर देते हैं उससे बौखला कर कलियुग उनकी दबी हुई फाइलें खोल कर कलियुगी शक्तियों को उनके अपनों और परायों में बैठाकर अपमानित प्रताड़ित करने के साथ पुण्यों का भक्षण करने भेजता है। तब योगमाया माँ अपनी मोहिनी माया से उन्हें मोहित करके कलियुगी शक्तियों को उनके स्थानों पर वापिस भेज देती हैं और हमारी वैभवता बनी रहती है। 20 रुपए पर हाथ लगाकर प्रसाद एवं दक्षिणा का संकल्प लें। 10 रुपए प्रसाद एवं 10 रुपए दक्षिणा के चढ़ा कर कहें मैं कल्कि जी की/का हूँ मुझे रास्ता दें।

प्रसाद विधि-बच्चों, जिनकी कम सामर्थ्य है/शुभ के डिब्बे में कम रुपए हैं वह छोटी थैलियों में एक रुपए दो बताशे अथवा एक च मच चीनी रखकर बना लें। जिस भी देवी-देवता का उपचार करना हो एक पैकेट पर हाथ लगाकर अपनी परेशानी बताकर प्रार्थना कर दो। जिनके शुभ के डिब्बे में रुपए ज्यादा हैं और दान करने में कोई परेशानी नहीं है वह 20 रुपए हाथ लगाकर के हलवाई से जितने का प्रसाद हो ले लें साथ में एक सिक्का दक्षिणा के लिए उससे अवश्य ले लें। अथवा एक थैली में 5 च मच चीनी एवं 5 का सिक्का डालकर पैकेट बनाकर रख लें। जहाँ हम लड्डू और सफेद बर्फी का नाम लिख रहे हैं बन पड़े तो वहाँ चीनी न चढ़ाएं।

प्रार्थना विधि-कल्कि समाज संबंधित देवी-देवता का उपचार करके अपनी परेशानी से निकलने की प्रार्थना करके यह अवश्य कहें हे कल्कि जी मैं आपका हूँ मैं आपका कार्य कर रहा हूँ/मुझे आपका काम करना है।

<u>कल्कि समाज ही नहीं किसी भी देवी-देवता को मानने वाले भक्त</u> 21 बार कल्कि महामंत्र जय कल्कि जय जगत्पते पद्मापति जय रमापते का जाप करके संबंधित देवी-देवता से अपनी परेशानी से निकलने की प्रार्थना करके कहें हे कल्कि जी भूमि का भार उतार दीजिए गौ, विप्र, धर्म सज्जन लोगों की रक्षा कीजिए सत्युग की स्थापना कर दीजिए। मुझे आपका काम करना है।

**हर देवी-देवता की अपनी एक विशिष्ट शक्ति होती हैं और उनके अपने अनोखे मंत्र और संकल्प होते है। प्रत्येक मंत्र-संकल्प आपके लिए अलग-अलग रूप में फलदायी बनते है। जैसे आप अपनी बीमारी अनुसार, उस बीमारी के स्पेशलिस्ट डॉक्टर के पास जाते है और उसकी दवाई लेते हैं। उसी प्रकार अपनी जरूरत/परिस्थिती के अनुसार आप उस स्पेशलिस्ट देवी-देवता के मंत्र और संकल्प का प्रयोग कर सकते हैं। डॉक्टर की दवाईयां तो सिर्फ़ शारीरिक तौर पर काम करती हैं लेकिन मंत्र और संकल्प सूक्ष्म रूप से आपके मन-मस्तिष्क-शरीर के रोग-दोष को हरते हुए, आपकी इच्छा-पूर्ति की भी शक्ति रखते हैं। क्योंकि ब्रह्मांड अंधा है, वह तो जैसा आप सोचते हों वैसा करता है। कलियुग में महाविष्णु श्री कल्कि भगवान 64 कलाओं (शक्तियों) के संपूर्ण निष्कलंक अवतार हैं जिन्होंने 33 कोटि (प्रकार के करोड़ नहीं) देवी देवताओं में से विशेष 12 देवी-देवताओं का चयन कर कल्कि समाज को सुरक्षा कवच प्रदान किया है। आज कल्कि समाज अपनी परेशानी-रोग-परिस्थिति के अनुसार हो उन देवी-देवताओं का सहारा ले कर निरंतर खुद ही नहीं अनेकों को आगे बढ़ा रहा है।*

*** कलियुग में महाविष्णु श्री कल्कि भगवान 64 कलाओं (शक्तियों) के संपूर्ण निष्कलंक अवतार हैं उन्होंने 33 कोटि (प्रकार के करोड़ नहीं) देवी देवताओं में से विशेष 12 देवी-देवताओं का चयन कर अपने कल्कि समाज को स्वप्नानुभव के माध्यम से सुरक्षा कवच प्रदान किया है। भगवान श्री कल्कि वह संजीवनी वृक्ष हैं, जिसमें प्रत्येक देवी-देवता फल रूप में उनके भक्तों के लिए उपलब्ध हैं और कल्कि समाज अपनी परेशानी-रोग-परिस्थिती के अनुसार उस देवी-देवता का सहारा ले रहा है।*

भगवान महा विष्णु के प्रमुख में 10वें और 24 वें अंतिम अवतार हैं। श्री कल्कि भगवान, जो कलियुग का नाश (पलायन) करने के लिए पृथ्वी पर अवतरित हुए जैसे महाविष्णु के प्रमुख में 7वें अवतार श्रीराम ने की राम लीला, प्रमुख में 8वें अवतार श्रीकृष्ण ने की माखन लीला, अब प्रमुख में 10वें महाअवतार ,हमारे श्रीकल्कि भगवान कर रहे हैं अनुभव लीला।

कल्कि महामंत्र 'जय कल्कि जय जगत्पते, पदमापति जय रमापते' का आप अपनी पूजा में गंगा जल की तरह मिला कर रोज 21 बार जाप करने से भक्तों को अपने आप ही स्वप्न, जागृत, वाणी या मानसिक अनुभव आना शुरू हो जाते हैं। अनुभवों के माध्यम से हमारे प्रभु कल्कि भक्तों को आने वाली परेशानियों के बारे में, हमारे मंगलमय कार्यों की पूर्ति में बाधाओं के बारे में और जो Height Of Glory हम प्राप्त कर सकते है, उनका एहसास करा देते हैं। अनुभव आने पर सही संकल्प-मंत्र जाप के द्वारा, भक्त श्रीकल्कि जी की निरंतर दया से अपने कष्टों को सूली का काँटा बना सकते हैं जिससे दैनिक तौर पर एक मंगलमय जीवन, ऐश्वर्यता-वैभवता के साथ व्यतीत कर सकते हैं।

भगवान कल्कि, महा विष्णु के संपूर्ण अवतार हैं। कलियुग परिवार के विभिन्न बुरी शक्तियाँ, जैसे भय, लोभ, अहंकार, ईर्ष्या, तनाव इत्यादि से लड़ने के लिए वह 12 देवी-देवता के सुरक्षा कवच के साथ आ रहे हैं। कल्कि जी की भक्ति करने से आपको सभी देवी-देवताओं का स्पेशल आशीर्वाद अपने आप प्राप्त हो जाता है। जैसे अगर आप किसी देश के प्रधानमंत्री के दोस्त हो, तो उस देश के सभी संसद मंत्रियों और अन्य सरकारी कर्मचारियों का सहारा आपको अपने आप प्राप्त हो जाता हैं, ठीक उसी तरह हैं प्रभु श्री कल्कि भगवान की भक्ति में अगर आप किसी अन्य देवी-देवता को भी पूजते हो, तो उनकी पूजा करने के बाद अंत में बोले 'मैं कल्कि जी की हूँ, मुझे उनका काम करना हैं' इससे आपको विशेष फायदा होगा और आपके मंगलमय कार्यों को गति मिलेगी।

लिखित अथवा आवाज में अपने अनुभव वॉटस ऐप पर निम्न नंबरों पर देकर पहली नजर में अर्थ, उपचार के जवाब के लिए

दिल्ली में- मेघना गोयल (कल्कि साहित्य से कलियुग की छावनी से निकल कर कल्कि जी की छावनी में पहुंचने के लिए-9136377829, डॉ. वी.पी.गुप्त (गंभीर रोगों के लिए)-9810000086, रेनू बंसल (उजड़े से बसने के लिए)-9818000004, संगीता गुप्त (निराशा से आशा की ओर आने के लिए)-9873137354, रश्मि गुप्त (पितृ दोष संबंधी)-9873345859, रमणी अग्रवाल (सरकार के पैसे से विदेश यात्राएं, नौकरी संबंधी)-9212216251, पारूल गुप्त (सरकारी टैक्स/यात्रा संबंधी)-9910003910 संतुष्ट न होने पर, इंदू बंसल-9818416191, मामाजी-9312533445,

कोलकाता में—वरूण चौधरी (मांगी हुई शक्तियों को जाने से रोकने के लिए)-09831089302,

रश्मि गनेरीवाल (षडयंत्रकारियों में घिरने पर)-09831273015, प्रतिभा अग्रवाल (जीवन के लिए)-09831193821, श्रुति सर्राफ (कुछ नया कर दिखाने के लिए)-09830157545, नेहा चौधरी (भीषण तनाव के लिए)-09163448228,श्रेया शर्मा (हैदराबाद) (अहंकार, अति आत्मविश्वास से बचने, जीवन में ऊँचाइयां पाने के लिए)+1(267)243-6643

जनवरी 2013 में साईं आडोटोरियम लोधी रोड नई दिल्ली के मंच पर बाल वाटिका के बच्चों ने 575 दर्शकों के बीच कल्कि लीला प्रस्तुत की। इस कल्कि लीला को 18 भागों में बांट कर सैन डिस्क 16 जी बी की पैन ड्राइव में अन्य ज्ञानवर्धक मनोरंजक वीडियोस के साथ मात्र 250 रुपए में उपलब्ध है। ऐसे ही श्री कल्कि के भजन, सत्संग, सहस्त्रनाम आदि के साथ ऑडियो पैन ड्राइव मात्र 250 रुपए में उपलब्ध है। पुण्य प्राप्ति के लिए पैन ड्राइव का दुरुपयोग न करें।

ऑडियो
पैन ड्राइव

पैन ड्राइव प्राप्त करने के लिए संपर्क करें

सुश्री मेघना गोयल (9136377829) सुश्री अलका गोयल (9811281271)
सुश्री संगीता गुप्ता (7678355589) श्री अमित गुप्ता (9910003910)

वीडियो
पैन ड्राइव

हमने ऐसा पाया है

सामान्य शरीर से जैसे हम बेहतर कार्य कर सकते हैं। वह असामान्य शरीर से संभव नहीं है। इस प्रकार सही लिखावट से शारीरिक व मानसिक तनाव पर नियंत्रण करके जीवन को हम खुशी के माहौल में बदल सकते हैं।

श्री हरमोहन सिंह बतरा (हैंड राइटिंग एक्सपर्ट) : 09820106071

बन पड़े तो भगवान श्री कल्कि को हृदय पटल पर विराजमान करते हुए महामंत्र लिखें इससे आप निश्चित ही चौतरफा प्रगति पाएंगे।

कल्कि जी का सिद्ध व चमत्कारिक मंत्र ''जय कल्कि जय जगत्पते, पद्मापति जय रमापते'' लिखने के अनेकों लाभ हैं जैसे :—

1. इसके लिखने से भाग्य उदय होता है।
2. इसके लिखने से वैभवता (धन, संपदा, भक्ति, ज्ञान व ऐश्वर्य) की प्राप्ति होती है।
3. इसके लिखने से उंगलियों की शक्ति बनी रहती है।
4. इसके लिखने से रूके हुए बिगड़े काम बनने लगते हैं।
5. इसके लिखने से टोने टोटके व तांत्रिक शक्तियों से बचाव होता है।
6. इसके लिखने से भगवान श्री कल्कि स्वप्नानुभवों द्वारा परेशानियों से निकलने के रास्ते देते हैं।
7. इसके लिखने से ज्ञानवान बुद्धिमान बच्चे आगे चलकर समाज के लिए साहित्य सृजन करते हैं।
8. इसके लिखने से कल्कि जी की कैबिनेट के विशेष देवी-देवताओं की कृपा मिलती है।
9. इसके लिखने से पितृ अपने लोकों में प्रसन्नता से रहते हैं और वहाँ से आपको आशीर्वाद प्रदान करते हैं।

सीधे-सीधे लिखें तो आपके वारे के न्यारे होते जाएंगे

शब्दों को मेरी तरह
मत तोड़ें मरोड़ें

जय कल्कि जय जगत्पते पद्मापति जय रमापते

जय कल्कि जय जगत्पते पद्मापति जय रमापते

पहले लो **पहले लो फिर दो धनवान बनने व बने रहने की प्राचीन व सरल नियमावली** **फिर दो**

देते कल्कि जी हैं-वैभवता (धन, सम्पदा, ऐश्वर्य, भक्ति व ज्ञान) लेता कलियुग* है-(नियमावली के अनुसार नहीं चलने पर नीचे विभिन्न रूपों में)

चाणक्य

ज्यादा क्या कहें राजनीति के पितामह चाणक्य ने अपनी नीतिग्रन्थ में लिखा है कि:-

वित्तेन रक्ष्यते धर्मो विद्यायोगेन रक्ष्यते। मृदुना रक्ष्यते भूपः सत्स्त्रिया रक्ष्यते गृहम॥

(धन से धर्म की रक्षा होती है अर्थात् धन के बिना कोई भी धार्मिक अनुष्ठान पूरा नहीं होता। धन हीन धर्म की रक्षा करने में असमर्थ होता है। विवशताओं के चलते उसे कुछ ऐसे कार्य भी करने पड़ जाते हैं जो धर्म के विरुद्ध होते हैं। इसलिये धर्म की रक्षा के लिये धन अनिवार्य है। —(चाणक्य नीति एवं सूत्रसंग्रह 82)

धर्म और प्रचार के कार्य धर्मादे में से चलते हैं

कल्कि जी पितृों के अनुभवों द्वारा संकेत देते हैं कि दैवीय शक्तियों के पास शेयर भेजो ताकि वह कलियुग की शक्तियों का भुगतान करके हनुमान जी-दुर्गा जी के योगी-योगिनी (किन्नरों जैसी) से आपको दूर रखें।

परिवार-व्यापार में खुशहाली बढ़ाने हेतू कल्कि जी द्वारा दी गई सरल नियमावली

व्यापारी अपनी सेल (बिक्री) का एक प्रतिशत* निकालें।

गृहणी मासिक घर खर्च का (शुभ का खजाना)	5%
बच्चों को मिली गिफ्ट का (शुभ का खजाना)	10%
तन्खाह(सैलरी)का शुभ का खजाना	5%
मकान/दुकान/प्लॉट/बेचना-खरीदना **(प्रोजेक्ट मनी)***	1%
विवादित-झगड़ेवाले-प्रापर्टी के बेचने खरीदने पर **प्रोजेक्ट मनी**	5%
सामान्य शादी होने का **प्रोजेक्ट मनी**	1%
शादी में मुश्किलें हो तो **प्रोजेक्ट मनी**	2%
शादी असम्भव हो रही हो तो **प्रोजेक्ट मनी**	5%
गृहणी को जेवर अकारण (सामान्य रूप में) मिलने पर **प्रोजेक्ट मनी**	1%
गृहणी को जेवर जब मुश्किल से मिले मिलने पर **प्रोजेक्ट मनी**	5%
गृहणी को जेवर नहीं मिलने के आसार पर **प्रोजेक्ट मनी**	10%
गर्भावस्था (प्रेग्नेंसी) के दौरान होने वाले खर्चे का **प्रोजेक्ट मनी**	10%

शुभ के खजाने का 30 प्रतिशत श्री कल्कि के साहित्य सृजन, मूर्ति स्थापना में अवश्य योगदान दें अथवा कहीं भी किसी भी कल्कि स्टोर से कल्कि साहित्य सामग्री खरीद कर व अपने उत्सवों जैसे जन्मदिन,सालगिरह, दीपावली, मंदिरों में दे देवें। बचा हुआ 70 प्रतिशत कल्कि भगवान के विभिन्न कार्यों में लगाएं जैसे घी, हवन सामग्री, कल्कि जी के महोत्सवों में जाने का किराया, रिक्शा-स्कूटर-कार का पैट्रोल आदि। इससे आपको घर में स्वच्छता व स्वास्थयता मिलेगी। दवाइयों, अस्पताल व डॉक्टरों का बिल ना के बराबर होगा और व्यापार में चमक आएगी।

संकल्प/शेयर मनी निकालते समय

यह प्रार्थना करें हे कल्कि भगवान जो रुपया हम संकल्प कर के आपके प्रोजेक्ट कार्यों के लिए दे रहे हैं इसे स्वीकार कीजिए। गौ ब्राह्मणों धर्म की रक्षा कीजिए। सत्युग की स्थापना कर दीजिए, राजसिंहासन पर विराजमान हो जाइए। हमारी वैभवता को बनाए रखें हमें आगे बढ़ने के रास्ते दीजिए।

***प्रोजेक्ट मनी** —प्रोजेक्ट मनी शुभ के डिब्बे में नहीं जाएगी न ही अपने हिसाब से खर्चें। यह श्री कल्कि बाल वाटिका फांऊडेशन के समुद्र रूपी कलश में मिलेगी जहाँ से श्री कल्कि जी के साहित्य, मूर्ति स्थापना, कल्कि बाल वाटिका संस्कार रोपण कार्यशालाएं प्रचार के कार्य निरंतर हो रहे हैं। यदि आप भी अपनी प्रोजेक्ट मनी से यही कार्य करना चाहते हैं तो एक बार क.बा.वा.फा.के समुद्र रूपी कलश में मिलाकर उससे भी अधिक रुपया सुश्री पूर्णिमा अग्रवाल (9810135085), सुश्री इंदू बंसल (9818416191), सुश्री मुक्ता शर्मा (एडवोकेट सुप्रीम कोर्ट)-9811134378 की तरह हमारे प्रोजेक्ट प्रभारियों से ले लेवें।

(* मुनाफा कम होने की स्थिति में 0.1, 0.2, 0.5 भी निकाल सकते हैं)

A/C no. of Shri kalki Bal Vatika Foundation-33515529809 IFSC Code : SBIN0000631 State Bank Of India Chandni Chowk Delhi-6

बन पड़े तो जो रुपया आप बैंक में जमा करवा रहे हैं तो कृप्या अपना नाम, रुपया जमा करवाने की तारीख और राशि सुश्री सुषमा गोयल (9899698240) को फोन करके या मैसेज कर देवें।

यह संस्था आयकर विभाग 12 AA में रजिस्टर्ड है उक्त संस्था को दिया सहयोग (दान) 80 Gके अंतर्गत आपको आयकर मे 50 प्रतिशत की छूट मिलेगी।

जरा बताओ तो सही ? किसके द्वारा हमें मिलता है ? जरा सी गल्ती होने पर कौन कैसे हमसे लेता है ? उत्तर नीचे देखें

उत्तर : दैवीय शक्तियाँ देती हैं, योगी-योगिनियाँ लेती हैं

भगवान शंकर सम्भल नगरी के तीनों कोनों पर विराज कर इसकी रक्षा करते हैं

इस ग्रन्थ में क्या है?

कल्कि जी अब नए नहीं आ रहे क्योंकि

कल्कि जी 27 बार पहले आ चुके हैं

अबकी बार 28 वें कल्प में आ रहे हैं

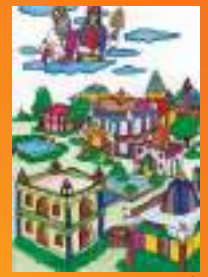

सृष्टि के आरंभ में विश्वकर्मा द्वारा निर्मित 68 तीर्थ-19 कूपों वाला सम्भल ग्राम

- तोते बोलते, सुनते, समझाते और दूसरों को बताते थे-पृ. 25
- जब काम वासना से स्वयंवर में राजा स्त्री बने-पृ. 21
- जब कल्कि जी ने राजा मरू से राम कथा सुनी-पृ. 45
- कलियुगी राक्षसी कुथोदरी का पेट चीर कर कल्कि जी बाहर निकले-पृ. 39
- चौतरफा विष उगलती नागकन्याओं से विषैला कांचीपुर-पृ. 45
- जब कल्कि पद्मानथ सिंहासन पर विराजे-पृ. 51
- जब क्रोधित शर्मिष्ठा ने शुक्राचार्य की पुत्री देवयानी को कुंए में डाला-पृ. 49
- अनंत मुनि ने कहा यही है माया भाई। जो मिला है उसे अमानत समझ कर उपयोग करो। पता नहीं कब लुप्त हो जाए-पृ.31

श्री कल्कि बाल वाटिका फांऊडेशन

यह संस्था आयकर अधिनियम की धारा 12 AA में रजिस्टर्ड है

उक्त संस्था को दिया गया सहयोग (दान) 80 G के अंतर्गत आपको आयकर में 50 प्रतिशत की छूट मिलेगी

1903, पहली मंजिल (कैन-कैन साऊंड सिस्टम) चांदनी चौक दिल्ली-6 फोन : 011-23863383

इस संस्था के अंतर्गत : श्री कल्कि गौशाला (इसमे अभी लगभग 200 गौधन है) बुराड़ी, दिल्ली-84 फोन : 9540000085

कल्कि जी के प्रचार कार्यों में सहयोगी संस्थाएं :

श्री कल्कि सेवा संस्थान (रजि.) गली नं.-12, न्यू उस्मानपुर, नई दिल्ली-110053 फोन : 9212703815

श्री रामेश्वर दास गोयल धर्मार्थ ट्रस्ट (रजि.) एल-2/35 महावीर नगर दिल्ली-110018 फोन : 8802730830

श्री कल्कि बाल वाटिका फांऊडेशन (रजि.) कोलकाता 2 नंबर, हाईट रोड, लिलुआ हावड़ा-711204

श्री कल्कि सेना (निष्कलंक दल) (रजि.) पुराना टेलीफोन एक्सचेंज, बरेली सराय, सम्भल 244302, उ.प्र

श्री गुरु प्रसाद शुक्ल ट्रस्ट एसोसिएशन (रजि.) वाराणसी-221005

जानने, समझने व देखने योग्य हिंदू धर्म एवं संस्कृति की प्राचीन धरोहर के लिए

श्री संजय म्यूजियम, जल महल के सामने, आमेर रोड, जयपुर-302002 श्री तिलक राज मो. (09784237657)

www.kalkiji.org

प्रथम संस्करण :- 5000, फरवरी 2017

द्वितीय संस्करण :-10000, नवंबर 2017

तृतीय संस्करण :-10000, दिसंबर 2019